मुल्य रु. ५-००
सलंग अंक ७९ नवम्बर-२०१३

श्री स्वामिनारायण

मासिक
प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महीने की ११ तारीख

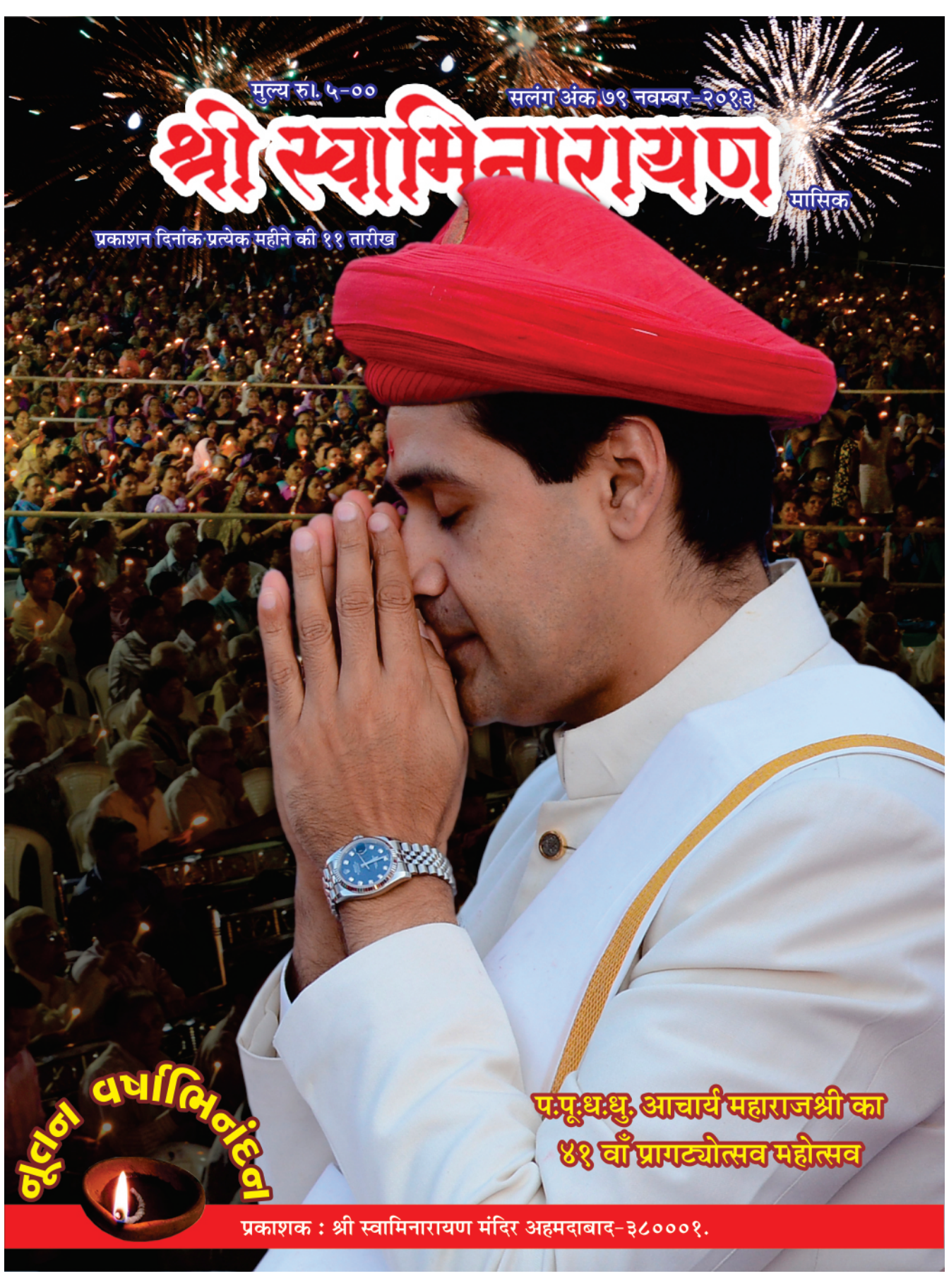

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का ४१ वाँ प्रागट्योत्सव महोत्सव

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

Tejendraprasadji

દીપાવલી - ગતવર્ષ દરમ્યાન [illegible] ઉત્સાહનું અવલોકન કરીને તે અંગે ચિંતન કરવાનો અવસર-

ચાલો આપણે સૌ સર્વાવતારી અવતાર શ્રી હરિના આશ્રિતો માટે તો ગતવર્ષ દરમ્યાન શ્રી હરિને રાજી કર્યાની ગણતરી, કે [illegible] અને શ્રી હરિને [illegible] કર્યા હોય તેજ ઉત્સાહ-

[illegible] મુજબ [illegible] રાખી નવા વર્ષમાં [illegible] જીવવું શ્રી હરિને રાજી કરી દેવા અને [illegible] [illegible] કામ [illegible] સદા [illegible].

આપણે પ્રિય ભગવાનશ્રી [illegible] + અવતારી [illegible] અધિપતિ [illegible] આપણા [illegible] આચાર્ય ધારણ કરી, અને [illegible] કરી આ દિવ્ય સંપ્રદાયની સ્થાપના કરી- શ્રી હરિના શબ્દો [illegible] તો "આ વાત અમે કદી [illegible] રાખ્યું નથી" પણ આ જીવની [illegible] તો અવતાર છે કે શ્રી હરિએ સ્થાપેલ આ સંપ્રદાય, [illegible] સાહિત્ય, આ [illegible] સ્વામીની [illegible] [illegible] કરવા પ્રેમ છે.

આગામી નૂતન વર્ષમાં શ્રી હરિ આપણા સૌને એવી દ્રષ્ટિ આપે કે આપણે તેમના દિવ્ય માર્ગ [illegible] અને [illegible] [illegible] ન [illegible] કુળ સંપ્રદાય, કુળ સિદ્ધાંતો- કુળ સંપ્રદાયનું સાહિત્ય તેનું અવલોકન રાખી આપણે આ મનુષ્ય જીવન [illegible] કરી શકીએ.

આપ સૌમાટે નૂતનવર્ષ પરમ મંગલકારી નીવડે તથા પરમકૃપાળુ શ્રી [illegible] [illegible] નવ પ્રાર્થના સાથે અમારા રૂડા શુભાશીર્વાદ પાઠવીએ.

પ.પૂ.ધ.ધુ. આચાર્યશ્રી ૧૦૦૮ શ્રીકોશલેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રી	પ.પૂ. મોટા મહારાજશ્રી શ્રી તેજેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રી	પ.પૂ. લાલજી મહારાજ શ્રી વ્રજેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રી

Shree Swaminarayan Museum, Opp. Terf School, Naranpura, Ahmedabad - 380013
Shree Swaminarayan Bagh, Memnagar, Ahmedabad - 380052

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र
वर्ष - ७ ● अंक : ७९
नवम्बर-२०१३

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०५
०३.	जन्मोत्सव बन्यो महोत्सव	०६
०४.	देवालय देव की स्थूल मूर्ति	१०
०५.	श्रीहरि के छठे, सातवें तथा आठवें वंशज के आशीर्वचन	१२
०६.	प्रतिदिन है दीपावली	१४
०७.	दीपोत्सवी पव नूतन वर्षाभिनंदन	१९
०८.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	२०
०९.	सत्संग बालवाटिका	२२
१०.	भक्ति सुधा	२४
११.	सत्संग समाचार	२८

संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स :
२७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स : ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणेदव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)

पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● वंशपारंपरिक देश में ५०१-०० ● विदेश १०,०००-०० ● प्रति कोपी ५-००

॥ अस्मदीयम् ॥

समस्त श्री स्वामिनारायण मासिक के वाचकों को, लेखकों तथा ऐनफेन प्रकारेण सेवा करने वाले सभी को सं. २०७० के नूतन वर्ष का प्रेमपूर्वक जयश्री स्वामिनारायण।

विगत मास में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के ४१ वें प्रागट्योत्सव गांधीनगर में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया था। दूसरी वात यह कि महाराज उत्सव प्रिय थे, उसी तरह उनके वंशज भी उन्हीं के अपर स्वरुप भी उत्सव प्रिय है। जन्मोत्सव के निमित्त लाखो भक्त एकत्रित हुए, परस्पर आदान-प्रदान के द्वारा उत्सव का सभी हार्द समझें तथा चाहे जैसा भी जीव हो, उसे इस तरह के उत्सव का अन्तकाल में याद आजाय तो उसका कल्याण हो जाय। इसलिये महाराजने उत्सव का आयोजन किया था। आगामी २०१४ दिसम्बर को अहमदाबाद कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर के जीर्णोध्धार का कार्य पूर्ण होते ही भव्य महोत्सव प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की अध्यक्षता में तथा समस्त धर्मकुल की उपस्थिति में सम्पन्न होगा। देश विदेश से सभी हरिभक्तों को पधारने के लिये सादर आमंत्रण है।

पुनः पुनः नूतन वर्ष का जयश्री स्वामिनारायण।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(अक्टूबर-२०१३)

८ प.भ. शोभन दिनेशभाई के यहाँ पदार्पण, सायन्स सीटी ।

९ गांधीनगर में विविधहरिभक्तों के यहाँ पदार्पण ।

१० श्री स्वामिनारायण मंदिर देवरासण पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण । महेसाणा प.भ. रमणभाई पटेल (भाउपुरा वाला) के यहाँ महापूजा प्रसंग पर पदार्पण ।

१३ ४१ वाँ प्रागट्योत्सव प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री की शुभ उपस्थिति में तथा संत हरिभक्तों की उपस्थिति में गान्धीनगर में धूमधाम से मनाया गया ।

१५ अक्टूबर से १ नवम्बर तक अमेरिका सत्संग प्रचारार्थ पदार्पण ।

प.पू. भावि आचार्य १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(अक्टूबर-२०१३)

१३ प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का ४१ वाँ प्रागट्योत्सव अपनी शुभ उपस्थिति में गांधीनगर में धूमधाम से संपन्न किये ।

१८ श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट शरदोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

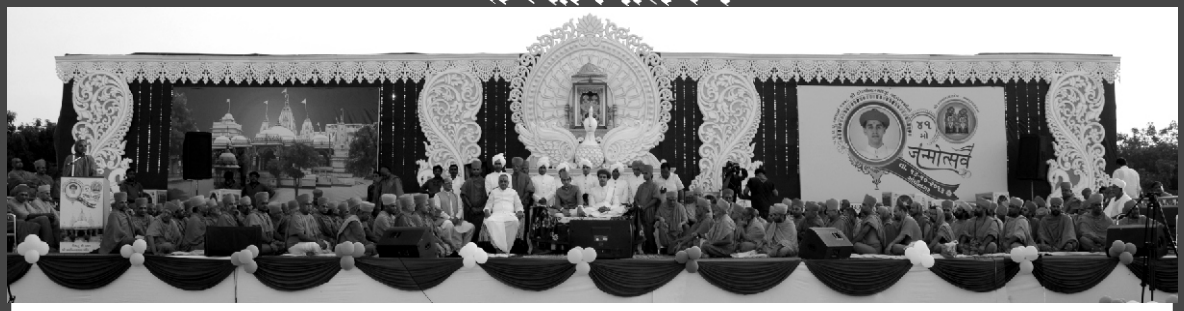

जन्मोत्सव बन्यो महोत्सव

- अतुल भानुप्रसाद पोथीवाला (मेमनगर-अमदावाद)

सामन्यतः व्यक्ति का जन्मोत्सव पारिवारिक उत्सव का प्रसंग बन सकता है। परंतु जब संप्रदाय की बात आती है तब विश्व फलक पर संप्रदाय का सत्संगी एक सूत्र में होकर जन्मोत्सव का आनंद लेता है। इससे यह अनोखा उत्सव उत्सव होजाता है। उसमें भी दशहरा, १३-१०-१३ रविवार के दिन सलोनी संध्या के समय रामकथा मेदान, च रोड सेकटर-११ गांधीनगर में प.पू. आचार्य महाराजश्री का ४१ वां जन्मोत्सव सायंकाल ४-१५ से रात्रि के ८-१५ तक समग्र धर्मकुल के सानिध्य में तथा विशाल ब्रह्मनिष्ठ संत समुदाय एवं हरिभक्त समुदाय के बीच सम्पन्न हुआ । यह उत्सव जिन्होंने देखा, दिव्यता का दर्शन किया, उनके भाग्य की क्या बात करें ! ऐसा अद्‌भुत यह जन्मोत्सव महोत्सव बनकर महक उठा।

समग्र उत्तर गुजरात अर्थात् दंढाव्य देश के तथा अमदावाद शहर के भक्तों ने दो वर्ष पूर्व यह चाहना की थी कि आपका ४१ वाँ जन्मोत्सव हमारे ४१ समाज के गाँव के भक्त समुदाय में यह उत्सव मनाया जाय। प.पू. बड़े महाराज की अनुमति लेकर परिवर्तन शीलता जिन्हें प्रिय है ऐसे प.पू. आचार्य महाराजश्री इस कार्यक्रम के लिये सहमति देदी। इसके बाद उत्साह के साथ संत-एवं भक्त समुदाय सुंदर ढंग से यह उत्सव सम्पन्न हो, उसकी तैयारी में लग गया।

प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री का ऐसा मानना है कि जन्मोत्सव तो एक निमित्त मात्र है, परंतु इस कार्यके अन्तर्गत समाज की सेवा हो तथा साथ में भजन भक्ति निरन्तर हो ऐसे कार्यक्रम का भी आयोजन होता रहे। उनके ऐसे संकल्प को साकार करने के लिये सभी सतत प्रयत्नशील होकर करीब १८ महीने से सामाजिक तथा धार्मिक कार्यक्रम सफलता पूर्वक पूर्ण किया।

महोत्सव के उपलक्ष्यमें सम्पन्न धार्मिक आयोजन

१. ११ करोड ४१ लाख ४१ हजार श्री स्वामिनारायण महामंत्र लेखन।
२. ४१ हजार जनमंगल नामावलि का समूह पाठ
३. १४१ मिनिट की ४१ गाँव में अखंड धुन।
४. ४१ गाँवो में सत्संग सभा।
५. १४१ पूजा पेटी वितरण
६. ४१०० श्री वचनामृच
७. ४१०० हरिभक्तों द्वारा समूह पदयात्रा (श्री नरनारायणदेव दर्शन)
८. ११४१ श्री स्वामिनरायण मासिक के आजीवन सदस्य।

महोत्सव के उपलक्ष्यमें सम्पन्न सामाजिक आयोजन

१. ४१ नि:शुल्क मेडिकल केम्प।
२. ११४१ बोटल ब्लड डोनेशन
३. १४१ युवानो को व्यसन मुक्ति
४. ४१ गाँव में ग्राम्य सफाई (स्वाश्रय द्वारा)
५. ४१०० वृक्षारोपण
६. ४१ ट्राइसिकल - विकलांगो को अर्पण
७. ४१०० अनाथ बालको को तंदुरस्त भोजन
८. ४१०० विद्यार्थिओ को शैक्षणिक साधन वितरण।

सायंकाल ५ बजे से ही आबाल नर-नारी विशाल सभा स्थल पर आकर बैठ गये थे। सायंकाल ५-०० बजे श्रीहरि के तीनो अपर स्वरुपों का आगमन हुआ। वरिष्ठ संतो तथा हरिभक्तों द्वारा स्वागत किया गया। सुदंर शहनाई से तथा फटाकडा की आवाज से सारा वातावरण अधिक पवित्र हो गया था। ''सजनी कोडे आनंद मारे घेर श्रीजी पधार्या'' श्री पूरव पटेल तथा साथी मित्रों द्वारा नंद संतो के सुंदर कीर्तन से वातावरण भक्तिमय बन गया था। प्रभु के अपर तीनो स्वरुप जब स्वस्थान ग्रहण किये तब श्री नरनारायणदेव की जय नाद से आकाश गूंज उठा था।

गरुडाकार विशाल सिंहासन पर श्री नरनारायणदेव (चित्र प्रतिमा) बिराजमान थे। स्टेज के मध्य में श्रीहरि के तीनो स्वरुप तथा अगल बगल में संत बिरजामान थे। १७१ जितने ब्रह्मनिष्ठ संत पधारे थे। काषाद वस्त्रधारी संत तथा श्वेत स्त्रधारी प.पू. बे़ महाराजश्री, पपू. आचार्य महाराजश्री, तथा प.पू. लालजी महाराजश्री इस तरह सुशोभित हो रहे थे। मानो स्वर्ग से पारिजातवृक्ष का पुष्प सशरीर गांधीनगर में आगया हो।

५-३० बजे जन्मोत्सव कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। शा.स्वा. रामकृष्णदासजी सभा संचालन प्रारंभ किये। सर्व प्रथम मंदिर के गोर तथा श्री वाचस्वति मिश्राजी (प्रधानाध्यापक-संस्कृत महाविद्याल जेतलपुर) वैदिक स्वस्ति वाचन के साथ पूजन किये। इसके बाद सभी वरिष्ठ संत यजमान, ट्रस्टी समूह प.पू. आचार्य महाराजश्री की आरती उतारे। इसके बाद ६-०० बजे उत्सव के उपलक्ष्य में पूर्व किये गये सभी कार्यो को अर्पणविधिकी गयी। ८ से १० मिनिट तक विडियो क्लिपिंग द्वारा इस आयोजन को समझाया गया था। इस तरह के आयोजन में जिन नवयुवकों ने अथक परिश्रम किया था उस में शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदास, शा.स्वा. व्रजभूषणदास, शा.स्वा. दिव्यप्रकाशदास, शा.स्वा. धर्मप्रवर्तकदास, स्वा. माधप्रियदास, शा. स्वामी हरिकृष्णदास, शा. स्वामी गोपालजीवनदास, शा.स्वा. कुंजविहारीदास, शा.स्वा. नारायणमुनिदास, स्वा. ऋषिकेशप्रसाददास इत्यादि नवयुवान संत प.पू. महाराजश्री द्वारा सम्मानित किये गये थे। ''नाना छे पण दिशा सारी छे'' श्रीजी के ये वचन यहाँ सार्थक हो रहे थे। सायंकाल ६-३० बजे महानुभावो तथा संतो द्वारा शुभ कामना के प्रवचन प्रारंभ हुए। जिस में श्री शंकरसिंह वाघेला अपने परिवार के सदस्य की तरह पधारे थे।

उन्होंने बताया कि बड़े महाराजश्री की वाणी तथा व्यक्तित्व ऐसा चुम्बकीय है कि मूल संप्रदाय की धरोहर को संजोये रखे हों। ऐसा पवित्र वाणी व्यवहार धार्मिक परिवारों में नहिवत मिलता है। गाँव-गाँव से पधारे हुए संत-जिस में कालुपुर मंदिर के महंत स्वामी, जेतलपुर के महंत स्वामी, देवप्रकाश स्वामी, पी.पी. स्वामी (छोटे) भुज मंदिर से महंत स्वामी, पार्षद जादवजी भगतजी जैसे अनेकों संत पधारे थे। वडनगर, मूली, इत्यादि स्थानों से संत पधारे थे। ब्र. स्वा. राजेश्वरानंदजी का संत मंडल, महंत स्वा. हरिकृष्णदासजी का संत मंडल, ध्यानी स्वामी का संत मंडल, पधारे हुए थे। जन्मोत्सव के मुख्य यजमान प.भ. श्री डाह्याभाई नारणदास पटेल (माणसावाला) भोजन प्रसाद के मुख्य यजमान धुंघट होटल परिवार, गांधीनगर तथा सभी आयोजनों के यजमान तथा सहयजमान अपने परिवार के साथ पधारे हुए थे।

सभा की संवादिता इतनी सुदंर थी कि एक संत के प्रवचन के बाद यजमान द्वारा पूजन करना पुनः इसी क्रम से सभी कार्यक्रम पूर्ण किये गये थे। संतो द्वारा प.पू. महाराजश्री को सुंदर शुभाभिसंशय दिया गया था।

पू. शा. स्वा. हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी कालुपुर मंदिर) : करीब डेढ वर्ष से इस कार्यक्रम को सफल बनाने कि लिये संत व्यस्त थे। यह अद्‌भुत मानवमेदिनी युवा संतो का पुरुषार्थ है। यह श्री नरनारायणदेव का प्रांगण प्रतीत हो रहा है। ऐसा दर्शन अन्यत्र कही संभव नहीं है। भुज के इतने संत कहीं देखने को नहि मिलेगे। देव प्रकाश स्वामी भले पढे नहीं लेकिन जीवन में शुद्ध क्रिया का यह प्रतिफल है। आज इनकी समझदारी स्पष्ट दिखाई दे रही है। छोटे पी.पी. स्वामी तो वज्र के टुकडे हैं। थकते ही नहीं है। राम स्वामी सरस्वती के पुत्र है। इन तीनो की त्रिपुटी महोत्सव में चार चांद लगा दी है।

पू. धर्मनंदनदासजी स्वामी (महंत स्वामी भुज मंदिर) : हम सभी को इन तीनो स्वरुपों का दर्शन हुआ पह बड़ी भाग्य की बात है। पू. आचार्य महाराजश्री श्रीजी महाराज की प्रणालिका के अनुसार संप्रदाय की बृद्धि करने में अथक परिश्रम कर रहे हैं। विदेश में भी मंदिरो का निर्माण करवा रहे हैं। शैक्षणिक प्रवृत्तियों में भी अपना संप्रदाय विशेष प्रयत्न कर रहा है। देव तथा आचार्य के प्रति खूब निष्ठा सभी को हो, कोई कमी नहीं रहे. अपना संप्रदाय उत्तरोत्तर बृद्धि को प्राप्त करे ऐसा आशीर्वाद प्राप्त करें।

पू. शा. आत्मप्रकाशदासजी स्वामी (महंत स्वामी जेतलपुर मंदिर) : ऐसी दिव्य सभा में प्रगट प्रत्यक्ष श्री स्वामिनारायण भगवान की उपस्थिति हो ऐसी प्रतीति हो रही है। अपने प.पू. आचार्य महाराजश्री के सरलता की क्या बात करें ? हम इनके साथ रहते हैं इसलिये विशेष जानते हैं। ये तो भगवान स्वामिनारायण के पुत्र हैं। इनकी विनम्रताकी क्या बात करें ? सामने मिलने पर जय स्वामिनारायण यदि कोई न बोला हो तो भी अन्तर से उसे आशीर्वाद दे देते हैं। आज एक संकल्प अवश्य करना है, यत्र तत्र जाने की जरुरत नहीं है, एकनिष्ठ रहना है। गादी-आरुढ हुये ९ वर्ष हो गये। २०० हरि मंदिरो की तथा १८ शिखरी मंदिरो की प्रतिष्ठा किये हैं। इन्हें गाँव अच्छा लगता है। इन्हें सभी के प्रति उदार भाव है। सरल स्वभाव के कारण लोकप्रिय है। बस प्रभु से यही प्रार्थना है कि इनके द्वारा इसी तरह अविरत विकास होता रहे।

पू. हरिकेशव स्वामी (सेक्टर-२३ गांधीनगर : अपने संप्रदाय की विशेषता है कि समाज के साथ रहकर समाज की नैतिक, आर्थिक, आध्यात्मिक उन्नति हो इसके लिये निरन्तर प्रयत्न किया जाता है। निष्ठा अपनी बुद्धि है। श्रद्धा हृदय है। ये दोनो श्री नरनारायणदेव के चरणों में बिराजमान है। अधिक मस्तकों का एकत्रित होना ठीक नहीं। जो जहाँ कहता है वहाँ पदार्पण करते हैं। हृदय का प्रत्येक स्यन्दन सत्संग के लिये अर्पित है। पू. महाराजश्री का प्रत्येक कार्य संप्रदाय तथा समाज के हित में है।

पू. निर्गुणदासजी स्वामी (असारवा गुरुकुल) : बड़े महाराजश्री तथा महाराजश्री के मन की बात है भगवान की भजन करना । त्याग-वैराग्य तथा ज्ञान हो लेकिन भगवान की भजन न हो तो मोक्ष की प्राप्ति नहीं होती । आज विजया दशमी के दिन आश्रितजनों के अन्तःशत्रुओं का नाश हो ऐसा सभी को हार्दिक आशीर्वाद प्राप्त हो ।

पू. श्यामसुंदर स्वामी (मूली मंदिर) : हे महाराज ! हमारे महाराजश्री को स्वस्थ रखें तथा निरोगी रखें जिससे वे भक्तों को सुख देते रहे । क्योंकि यहाँ अर्थात् सत्संग में जो जब चाहे वह मिलता है।

पू. नारायणवल्लभदास स्वामी (वडनगर) : सातवां वार रविवार सातवें वंशजका जन्म दिन १३-१०-१३ ३६ = ९ = नवमी के दिन भगवान का प्रागट्य, आज जहाँ तक दृष्टि जा रही है मानव मेदिनी दिखाई दे रही है। जिनका कोई दूसरा जोड़ा नहीं ऐसे हम सभी को गुरु मिले हैं । श्री नरनारायणदेव तथा धर्मकुल के प्रति मस्तक झुकने पर ही अक्षरधाम की प्राप्ति संभव है। गुरु के स्मरण मात्र से ही आसुरीशक्ति का विनाश हो जाता है।

पू. सत्संगभूषण स्वामी (गांधीनगर सेक्टर-२) : आज जन्मोत्सव में ४१००० से भी अधिक भक्त इस सभा में उपस्थित हैं। महाराजश्री के क्रांतिकारी विचार तथा परिवर्तनशील स्वभाव का यह परिणाम हैं। कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री मानो कोशलपति रामजी ही होगये हों। इन्ही की शरणागति में हम सभी का कल्याण है । श्री नरनारायणदेव के प्रति तथा गादी के प्रति निष्ठावान बनें, पतिव्रता की तरह रहने में सर्व सुख है।

महानुभावों में आरोग्य मंत्री नीतिनभाई पटेल पधारे थे। उन्होंने बताया कि जन्मदिन के बहाने जन सेवा तथा धर्म सेवा का आयोजन प्रतिभासित होता है।

सभी भक्तों की तरफ से श्री डी.एन. पटेल (कुंडल) ने आभार विधिकी थी . एन.आर. आई भक्तों की तरफ से मनजीभाई हीराणी ने शुभेच्छा व्यक्त की थ।

सायंकाल ७-३० तक शुभेच्छा का क्रम चला था। बाद में श्री पी.पी. स्वामीने प.पू. महाराजश्री का ४२ वाँ जन्मोत्सव ४२ समाज के मध्य से कलोल में की जाने की संमति प्रदान की है । बाद में सर्व प्रथम श्री लालजी महाराज तथा प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. महाराजश्रीने आशीर्वचन प्रदान किये थे।

विशेष सूचना : श्रीहरि के अपर तीनों स्वरुपों का आशीर्वाद इस अंक में प्रकाशित किया गया है। जो सभी को अवश्य वांचना है। उसका निदिध्यासन भी करना है।

रात्रि के ८-१५ बजे सभी भक्त अनपे हाथ में मोमबत्ती लेकर प.पू. आचार्य महाराजश्री की आरती उतारे थे उस समय लग रहा था चन्द्रमा की आरती तारा गण उतार रहे हों।

सभा के अंत में आतिश बाजी की गयी थी। अंत में सभी आगन्तुक महाप्रसाद ग्रहण करके बिदा हुए थे। श्री नरनारायणदेव युवक मंडल उत्तर गुजरात तथा अमदावाद के हरिभक्त तन-मन-धन से सेवा का कार्य किये थे, जो सर्वथा सराहनीय थी।

पू. महाराजश्री को यह कार्यक्रम महोत्सव का रुप प्रतिभासित हुआ था । गाँव-गाँव से आये भक्तों के जीवन का वांचन करें तो ख्याल आयेगा कि शहरों की अपेक्षा ग्राम्यजन कितने निरपेक्ष्य तथा निरभिमानीपना वाले होते हैं - उन्हीं के पुरुषार्थ का यह प्रतिफल है। जो आचार्य तथा देव के प्रति समर्पित हैं। जीवन भले गरीब हो लेकिन २५०/- रुपये भरकर मासिक पत्रिका के अनगितनत सदस्य बनकर समर्पण की भावना व्यक्त किये थे।

इस प्रसंग पर सामाजिक प्रवृत्ति भी हुई थी। ८०० जितने लोगो का स्वास्थ्य निदान कार्य हुआ तथा २०० जितने लोगों ने ब्लड डोनेशन किया था।

अंत में इतना सभी को अवश्य करना है कि मन में खराब विचार का संकल्प भी नहीं आना चाहिए तर्क-

पेईज नं. ११

देवालय देव की स्थूल मूर्ति

- साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुर धाम)

वैदिक परंपारगत अपने आर्षद्रप्टा ऋषि, मुनि, विद्वानो ने मंदिरों के आकार, रचना तथा व्यवस्था के लिये भारतीय शिल्प शास्त्र, वास्तु शास्त्र तथा ज्योतिष शास्त्रो की रचना की थी । उत्तर तथा दक्षिण भारत के मंदिरो के आकार में भिन्नता दिखाई देती है लेकिन तीनो शास्त्रों को ध्यान में रखकर मंदिरों का निर्माण किया गया है । हिन्दु, जैन, मुस्लिमों के धर्म अलग अलग है फिर भी रचना का कार्य तीनों शास्त्रो को ध्यान में रखकर किया गया है । जिस में जैन धर्म के अनुयायी अक्षरश: पालन करते हैं ।

अपने नंद-संत तीनो शास्त्रों को तलस्पर्शी ज्ञान वाले थे । इसी लिये नंद-संतो के समकाल में जितने भी मंदिरो का निर्माण किया गया है वे सभी वास्तु, ज्योतिष, शिल्प शास्त्र के आधार पर हैं । वास्तु का मतलब व्यवस्था, ज्योतिष का मतलब दिशा के अनुसार माप साईज, शिल्प का मतलब कलाकृति । नंद संतो में स.गु. आनंदानंद स्वामी शिल्प शास्त्र के पूर्ण जानकार थे । अन्य संत उनसे सीखते थे । दूसरे संत स.गु. ब्रह्मानं. स्वामी कच्छ धमडका में रहकर १४ विद्या में पारंगत थे । वे तीनो शास्त्र को पूर्ण पढे थे । इसके अलांवा स.गु. निष्कुलानंद स्वामी जन्म से बढई के कार्य में कुशल थे ।

देवालय मंदिर निर्माण से आरंभकरके प्रतिष्ठा पर्यन्त जिस तरह से मूर्ति की प्रतिष्ठा की जाती है ठीक उसी तरह मंदिर की भी प्रतिष्ठा की जाती है । जिस तरह मूर्ति की अखंडता, मर्यादा रखी जाती है ठीक उसी तरह मंदिर की भी अखंडता, मर्यादा, पवित्रता, स्वच्छता रखी जाती है ।

मंदिर के मूल मेंनव शिलायें सोलह से अंकित की जाती है । जो भगवान की चरण रुप है । पाया जंघादासो कटी प्रदेश, दाबडी कंठ, कुंभी - कोणी, खंभा- (चौकी हाथ) गर्भगृह - मुख, झालर, घंटी, घंट-जीभ, मध्य में अखंड दीप - पांच नैवेद्य प्राण हैं । सिंहासन की पीठिका बैठक - हृदय, मूर्ति-आत्मा, मुख्य द्वार - नाभि, खिडकी - कान, कपोलपाली - खंभा - मंडप - उदर, कलश - मस्तक, प्रलय - मांस, मज्जा शिला - अस्थि, एक से एक पत्थर को जोडने वाली धातु की खीला - स्नायु, शिखर - नेत्र । ध्वजा - केश - जिस पीठिका का पर देव को प्रतिष्ठित किया जाता है उसे सिंहासन कहते हैं । सिंह जैसा आसन - सिंहासन कहा जाता है ।

उदर भाग में यज्ञोपवीत मूर्ति क चरण में रस के प्रतीक रुप में पारा तथा सुवर्णादिक धातु-हीरा, माणेक रत्न इत्यादि रखा जाता है । जिस तरह अपने शरीर में सभी मिनरल्स विटामीन होते हैं उसी तरह उपरोक्त सभी धातु को बताया गया है । भगवान के चार आयुधों का

आह्वान किया जाता है । देवालय के शिखर पर चार दिशाओं में दिगपालों की स्थापना की जाती है । इसके साथ ६४ योगिनी की आठ दिशाओं से आसुरी तत्वों की रक्षा के लिये स्थापना की जाती है । शिखर पर वीर आकृति वाले सिंह रखा जाता है । जो शौर्य का प्रतीक है । देवालय की सीढी की गणना शक्ति के रुप में की जाती है । प्रथम सोपान राजा, द्वितीय - यमराजा, तृतीय - इन्द्र है । देवालय की सीढी - तीन, चार, छ, सात, नव, दश या बाहर के रुप में प्रतिष्ठित किया जाता है । तीनो तीन जोड़ी के रुप मं देखने को मिलता है । मंदिर के मकान - की सीढी ११, नहीं होनी चाहिये । अंतिम सीढी यम की नहीं होनी चाहिये । या तो इन्द्र या तो राजा की संख्या होनी चाहिये । मदिर में अंतिम सीढी का सभी लोग पैर छूते हैं । क्योंकि उसमें इन्द्र का निवास होता है । वैष्णव संप्रदाय की मान्यता के अनुसार प्रभु विचरण करके सीढी पर चढकर ही मंदिर में पधारते हैं । इसलिये मंदिर की प्रत्येक सीढी को प्रणाम करना चाहिये । शरीर में जिस तरह इन्द्रियों में तथा अन्तःकरण में देवता का वास है, उसी तरह प्रत्येक स्तम्भ में पुतली के रुप में देवताओं का वास है । मंदिर के प्रत्येक भाग का स्पर्श करना चाहिये या दर्शन करना चाहिये । यह परमात्मा के अंगो का दर्शन या स्पर्श कहा गया है । अपने शास्त्रों में विधान है कि जब - जब मंदिर के मरम्मत की आवश्यकता हो तब-तब उन-उन अंगो की चालन विधिकराकर मरम्मत के बाद पुनः स्थापना करानी चाहिये । इसी लिये मंदिर में सफाई करते समय जो धूल एकत्रित होती है वह दिव्य मानी जाती है । कितने हरिभक्त इस धूल को अपने घर लेजाकर रखते हैं । ऐसे रजके स्पर्श से असंख्य कार्य सफल हो जाते हैं । मंदिर में दर्शन करने से पूर्व मंदिर को भगवान का रुप मानकर सर्व प्रथम उसी का आदर पूर्वक दर्शन करना चाहिये । बाद में सीढी का स्पर्श करके ठाकुरजी का दर्शनक रने के बाद निर्गमन के समय ध्वजा - कलश के साथ भाव पूर्वक मंदिर का दर्शन करना चाहिये । अखंड दीपक को मूर्ति के दक्षिण दिशा में रखना चाहिये । दीपक ठाकुरजी का नैवद्य है । दीपक में घी रखने से भगवान के भोग से अधिक फल मिलता है । अपना जप-तप-व्रत इत्यादि दीप द्वारा परमात्मा को समर्पित किया जाता है । दीप का वंदन परमात्मा के वंदन तुल्य है ।

अनु. पेईज नं. ११ से आगे

वितर्क भी नहीं होना चाहिये । हमारे संप्रदाय के सभी भक्तजन ऐसी निर्मानी, विवेकी, सहृदयी बने जिससे जब भी प.पू. महाराजश्री के दर्शन हेतु जायें तो उनके स्वरुप को हृदय में उतार कर जायें और अंतिम समय तक उस स्वरुप को धारण किये रहें ।

इस तरह ४२ वाँ जन्मोत्सव भी धूमधाम के साथ श्रद्धापूर्वक हम सभी मिलकर मनावें ।

आयो रे आयो रे उत्सव आयो रे ।
भायो रे भायो रे मडने भायो रे ॥

महोत्सव के समय भोजनालय विभाग में स्वा. धर्मस्वरुपदासजी (नाथद्वारा), स्वा. राजेन्द्रप्रसाददासजी (कालुपुर), स्वा. मुकुंदप्रसाददासजी (कालुपुर), स्वा. अनिरुद्धप्रसाददासजी (धोलका) इत्यादि संतो की सेवा सराहनीय थी ।

४१ वें जन्मोत्सव के आयोजक तथा व्यवस्थापक संत

- स.गु. स्वा. देवप्रकाशदासजी (महंतश्री नारायणघाट)
- स.गु. स्वा. पी.पी. (महंतश्री नारायणघाट)
- स.गु. स्वा. रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर)
- स.गु. स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी (कोटेश्वर)

तथा

- श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट तथा समस्त सत्संग समाज अमदावाद शहर तथा उत्तर गुजरात ।

तथा

- श्री नरनारायणदेव युवक मंडल अमदावाद देश को कोटि कोटि अभिनंदन के साथ धन्यवाद ।

श्रीहरि के छठे, सातवें तथा आठवें वंशज के आशीर्वचन

संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

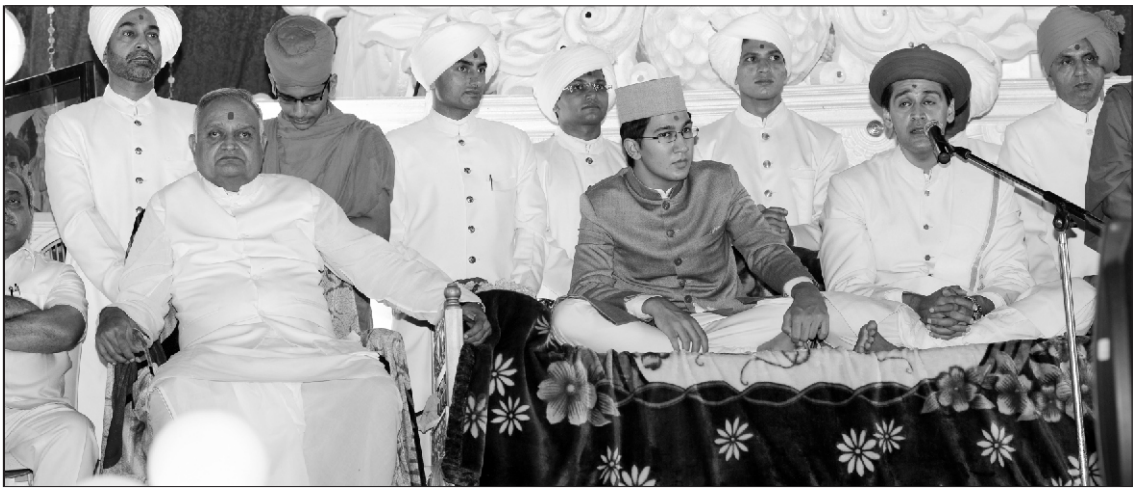

ता. १३-१०-१३ रविवार को गुजरात की राजधानी गांधीनगर में सत्संग की राजधानी अमदावाद श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोसलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का ४१ वां प्रागट्योत्सव धूमधाम के साथ मनाया गया था। विद्वान-ब्रह्मनिष्ठ संतो के मुख से सत्संग की वात सुनकर, धर्मकुल के मुख से अमृतवाणी सुनने का लाभ जिन्हे नही मिला उनके लिये आशीर्वचन के कुछ अंश प्रस्तुत करते हैं।

प.पू. लालजी महाराजश्री हंसते हुये के कि हम उम्र में छोटे है इसलिये पूज्य बापुजी को हम न आशीर्वाद दे सकते है न, गीफ्ट दे सकते हैं, क्योंकि गीफ्ट देने के लिये उन्हीं से लेकर देना होगा। पूज्य बापूजी के निर्मानी पना की तथा सत्संग सेवा की प्रशंसा करके उन्हीं के मार्ग पर चलने की भावना व्यक्त करके, महाप्रभु श्री नरनारायणदेव से प्रार्थना किये कि श्री बापूजी की दीर्धायुष रहे तथा स्वास्थ्य खूब अच्छा रहे।

प.पू. बड़े महाराजश्री अपने जीवन में संभव है कि सर्व प्रथम खड़े होकर आशीर्वाद दिये हों।

उन्होंने कहा कि हमारा दर्शन आप सभी को हो इसलिये खड़ा नहीं हुआ बल्कि आज हम सभा में उपस्थित सभी का दर्शन हो सके इसलिये में खड़ा हुआ हूँ। आज की यह सभा तथा अक्षरधाम की सभा में लेशमात्र भी अन्तर नहीं है। हाँ, अन्तर इतना ही है कि इस सभा में हम स्टेज ऊपर हैं तथा आप सभी नीचे बैठे हैं। परंतु अक्षरधाम में हम सभी एक साथ बैठनेवाले हैं। वहाँ केवल महाराज ऊपर बैठने वाले हैं। हम जब आचार्यपद पर थे तब घर से मंदिर जाने के लिये निकलते उस समय हमारी माताजी ऊपर की खीड़की में से दोनो हाथ जोडकर मस्तक झुकाती थी। हम पूछते, मां ! यह उल्टी गंगा क्यों ? आपको हम मस्तक झुकाये यह ठीक है। लेकिन आप क्यों ? तब वे कहतीं कि, हम अपने पुत्र को नहीं बल्कि आचार्य महाराजश्री को मस्तक झुकाती हैं क्योंकि उनके मस्तक पर यह लाल पगड़ी होती है। जब घर एकट्ठा होते है तब मा-बेटा के रुप में होते हैं। हम जब आरती उतारते हैं तब व्यक्ति की आरती नहीं उतारते।

परंतु महाराजने जो लाल पगड़ी दिया है - उससे अलंकृत आचार्य पद की आरती उतारते है । हमारे बापूजी को डायाबिटीस, बीपी ती तकलीप थी । मैने संकल्प कर लिया था कि यह तकलीफ अपने जीवन में नहीं आने दूँगा । इसलिये छोटेपन से ही कसरत इत्यादि करके शरीर को फिट रखा था । महाराजने शिक्षापत्री लिखी उसमें एक और सम्बिधान लिखना चाहिये था कि हमारे आचार्य को शरीर फिट रखना होगा । वह इसलिये कि सत्संगियो को प्रसन्न रखने के लिये उनके यहाँ पधरामणी करने के लिये शरीर को फिट रखना चाहिये । आचार्य महाराजश्री को भी मैंने बाल्यकाल से इस वात की शिक्षा दी थी । इसलिये उनकी शरीर पूर्ण स्वस्थ एवं तंदुरस्त है । चि. लालजी महाराजश्री को भी व्यायाम - कसरत में खूब रुचि है । और भी सत्संग की उन्नति करें, प्रगति करें ऐसी श्री नरनारायणदेव के चरणों में प्रार्थना ।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री अपने आशीर्वचन में बताया कि : महाराजने शिक्षापत्री में हम सभी को सर्व प्रथम मनुष्य बनने की शिक्षा दी है । अहिंसा आदिक मानवता का पाठ सर्व प्रथम सिखाये हैं । इसके बाद मंदिर जाने की आज्ञा की है । कितने लोग यह क्रम छोडकर सीधे मंदिर आजाते हैं । बाद में क्या होगा ? उनके परिवार में संस्कार की कोई बात नहीं होपाती और मंदिर आजाते हैं । उनका शरीर मंदिर आता है । लेकिन मन घर रहता है । ऐसे लोगों को मंदिर से बाहर तो किया नही जासकता । परंतु वे अपने रीति से देव से अलग होकर चले जाते है ।

प्रत्येक कार्य मे संयम की जरुरत होती है । पूरी थाली मिल गयी तो पूरी थाली नहीं खाजाना, आधी तो दूसरे के लिये भी रखनी चाहिये । पूरी खाजाने पर तो शरी ही बढेगा । बगल में गरबावालों का टाईम हो गया । आवाज आने लगी । हम उनके लिये तकलीफ वाले न बने यह भी मानवता है । यहाँ पर हमसे भी अधिक टाईम लेलिया गया । आप सभी को संयम नहीं रहपायेगा । भूख खूब लगी होगी । बापूजी हमे प्रत्येक छोटी बड़ी बात सिखाते हैं । कसरत के खूब आग्रही । आज भी वह क्रम हम बनाये हुये हैं । यह क्रम सभी को बताता भी हूँ । अभी वे अपने पांच कि. वजन धटादिये हैं । लंबी आयुको हम नही मानते । जितना जीना हो उनता स्वस्थ रहकर सत्संग की सेवा करें यह महाराज के चरणों में प्रार्थना ।

होस्पिटल की जो वात बापूजीने किया है उसका संकल्प पू. बापूजी कई वर्ष पूर्व किये थे । हम रोगियों की सेवा करें यह अच्छी बात है । परंतु लोग बिमार ही नही पडे इसके लिये सभी को दैनिक जीवन में ऐसी शिक्षा देनी है । इसके लिये महाराज ने नियम भी बनाये हैं । पू. बापूजी के नाम स्मरण के साथ मेडीकल संकुल - रीसर्च इन्स्टीट्युट बनेगा । जिसके लिये नारणपुरा विस्तार में जमीन भी है ।

अपने सभी उत्सव उत्तरोत्तर अच्छे होते रहे हैं । वर्तमान में अपने श्री नरनारायणदेव कालुपुर मंदिर के जीर्णोद्धार का काम चल रहा है । नूतन निर्माण की अपेक्षा जीर्णोद्धार कार्य कठिन होता है । श्री नरनारयणदेव की मूर्ति का थोडा भी स्पर्श न हो और हरिभक्तों को उनका नित्य दर्शन भी होता रहे - इस तरह का कार्य हो रहा है ।

यह काम पूरा होते ही उसके निमित्त श्री नरनारयणदेव का महोत्सव हम आगामी २०१४ दिसम्बर को करने वाले हैं । कारण यह कि अपना एक-एक श्वास श्री नरनारायणदेव की कृपा के आधार पर है । श्री नरनारायणदेव का हम सभी के ऊपर बड़ा ऋण है । हम बार-बार यह कहते आये हैं कि श्रीजी महाराज तथा श्री नरनारायणदेव में अणुमात्र भी अन्तर नहीं है ।

देश-विदेश, शहर-गाँव, से आये हुए संत-भक्तों का महाराज खूब अच्छा करें, मंगल करें, श्रेय करें तथा आप सभी की सभी शुभ कामना पूरी करें । ऐसी श्री नरनारायणदेव के चरणों में प्रार्थना ।

प्रतिदिन है दीपावली

- अतुल भानुप्रसाद पोथीवाला (मेमनगर-अमदावाद)

दीपावली अर्थात् प्रकाश का पर्व ''तमसो मा ज्योतिर्गमय'' वेद की इस ऋचा को जीवन में रीफ्रेश करके अन्तर प्रकाश करना ही दिपावली है।

अमावस्या कितनी आक्रामक क्यों न हो लेकिन उसे भी प्रातः के प्रकाश की अवश्यकता तो होती ही है। इसी तरह मनुष्य के जीवन में अन्धकार (धैर्य) कसौटी मात्र है। अज्ञान रुपी अमावास्या को श्रीहरि के वचनरुपी सत्संग के प्रकाश से दूर करना चाहिये। इससे परमेश्वर की मनोहर प्रतिपदा रुपी स्वरुप अपने आप अन्तर में प्रकाशित हो उठेगा।

दीपोत्सव अर्थात् वर्ष परिवर्तन का संधिकाल, वर्ष परिवर्तन अर्थात् आत्मदर्शन का अनमोल अवसर।

समग्र विश्व में मंदी तथा भारत वर्ष में मंहगाई का आक्रमण हो गया है। लेकिन गरीबो का तो दिवालिया हो गया है । परंतु हम सभी बड़े भाग्यशाली है कि परमकृपालु श्री स्वामिनारायण भगवानने सत्संग रुपी अमूल्य भेंट दिया है। इसीलिये तो सत्संग के प्रभाव से हमारे यहाँ बारह महीने दीपावली है। सत्संगी मात्र के यहाँ रोज होली है।

सौ करोड दीवाली ने दशरा क्रोड हजार।
एक थकी पण आ समे आनंद अपरंपार ॥

अपने सत्संग में तो सुख ही सुख है। लेकिन स्वयं कहीं से दुःख को बुलाये नहीं तो ऐसी प्रभु से प्रार्थना करें ।

नित्य व्यवहार निर्मल, परिशुद्ध, कर्तव्य निष्ठ, सदाचार युक्त तथा धर्ममय बने यही जीवन की सच्ची उपलब्धिहै। दीपोत्सवी का पर्व अर्थात् ३६५ दिन तक श्रीहरि के द्वारा प्रदर्शित मार्ग पर चलने की प्रतिज्ञा।

जीवन में एकाकी लाभ की ही आशा नहीं रखनी चाहिये इसके साथ सौजन्य शील व्यवहार भी होना आवश्यक है । दीपावली के अवसर पर शुभ-लाभ-स्वस्तिक इत्यादि का चिन्ह बनाते हैं। रंगोली करते है, दीप जलाते हैं।

प्रकाश के पर्व का स्वागत करते हैं। इसी तरह हम सभी सत्संगी अपने शुभ गुणों से सत्संग में खुशबू फैलाकर आत्मश्रेय प्राप्त करने का संकल्प करें। अन्तर में श्रीहरि को विराजमान करें । इससे श्रीहरि अन्तर में प्रकाश स्वरुप होकर विराजमान रहेंगे।

श्रीहरि द्वारा प्रदर्शित धर्म, ज्ञान, वैराग्य तथा भक्ति के प्रकाश को जीवन में उतारकर उनकी महिमा को यथार्थ समझकर सर्वव्यापी बनावें तभी जीवन की सार्थकता है। ब्रह्मानंद स्वामी ने कहा कि - हे महाराज ! आप जब - जब हमारे घर आते हैं तब - तब दीपावली ही होती है। प्रेमानंद स्वामीने भी ऐसा ही लिखा है। ''हमें जब भगवान का दर्शन होता है तब हमेशा दीपावली जैसा हो जाता है। मुखारविंद के दर्शन होते ही अन्तर में आनंद छलक उठता है।

राज मारे दिन दिन दिवाली।
वहालां मलतां तमने वनमाली ॥
महोन आव्यां तमे मंदिरीये।
काजुदीप तणां उत्सव करीए ॥
दीठे दिवाली रे गिरिधर, दीढे दिपाली रे।
प्रेमानंद आजदणो अंतरमां मोहन मुख भाली रे ॥
ब्रह्मांद ना वहाला, तम संग रमतां मारे।
दहाजी दहाडी छे दिवाली।
हैडामां मुने वाहालां लागो छोवनमाली ॥

जिस दिन से सर्वावतारी श्रीहरि मिले है, सत्संग की पहचान हुई, परमकल्याणकारी श्री नरनारयणदेव की प्राप्ति हुई उसी समय से अपने जीवन में नूतन वर्ष का प्रारंभ हो गया है। सत्संगी मात्र समर्पण का भाव रखे तथा सत्संग की मस्ती में रहें।

नूतन वर्ष के नवीनतम प्रभात में श्री नरनारायणदेव का मंगलमय दरशन करते समय हम सभी के पथप्रदर्शक प.पू. बड़े महाराजश्री के उपरोक्त आशीर्वचन को जीवन में उतारेंगे और सार्थक करने का संकल्प करेंगे तो सत्संगी मात्र को -

''दहाडी दहाडी रे दिवाली''

પ.પૂ.ધ.ધુ. આચાર્ય મહારાજશ્રીનો ૪૧મો પ્રાકટ્યોત્સવ મહોત્સવ

जन्मोत्सव

ધાર્મિક તથા સામાજીક પ્રવૃત્તિમાં સહયોગી સંતો

- શા. સ્વામી ચૈતન્યસ્વરૂપદાસજી - કોટેશ્વર
- શા. સ્વામી વ્રજભૂષણદાસજી - નારાયણઘાટ
- શા. સ્વામી દિવ્યપ્રકાશદાસજી - નારાયણઘાટ
- સ.ગુ.શા.સ્વામી ધર્મપ્રવર્તકદાસજી - ગાંધીનગર
- સ.ગુ.શા.સ્વામી હરિકૃષ્ણદાસજી - એપ્રોચ
- સ.ગુ.શા.સ્વામી માધવપ્રિયદાસજી - સિધ્ધપુર
- સ.ગુ.શા.સ્વામી કુંજવિહારીદાસજી - કાલુપુર
- સ.ગુ.શા.સ્વામી અભિષેકપ્રસાદદાસજી - વડનગર
- સ.ગુ.શા.સ્વામી ઋષિકેશપ્રસાદદાસજી - ઈસંડ
- સ.ગુ.શા.સ્વામી ગોપાલજીવનદાસજી - મુળી
- સ.ગુ.શા.સ્વામી નારાયણમુનિદાસજી - કાલુપુર
- શ્રી નરનારાયણદેવ યુવક મંડળ - અમદાવાદ શહેર
- શ્રી નરનારાયણદેવ યુવક મંડળ - ઉત્તર ગુજરાત

दीपोत्सवी पव नूतन वर्षाभिनंदन

- महादेव धोरियाणी (राजकोट)

दिल में दीपक जलाओ तो पग पग पर प्रकाश फेले । स्थान-स्थान पर दीप प्रगटाओ, लेकिन अंतर में अंधकार रहे तो उस दीप के प्रकाश का क्या प्रयोजन । दीपोत्सवी अर्थात् प्रकाश का उत्सव । आनंद तथा उल्लास का उत्सव । जो आश्विन कृष्ण एकादशी से अमावस्या तक का उत्सव पंचक है । एकादशी तथा वाघ द्वादशी से इसका उत्सव प्रारंभ होता है । इस पर्व को दीपावलिका, सुखरात्रि या यक्षरात्रि कही जाती है ।

नूतन वर्ष का पदार्पण हो चुका है । अपना समस्त जीवन सद्विचार तथा सदाचार से सुरभिमय बने इसके लिये सन्निष्ठ प्रयत्न करना चाहिये । नूतन वर्ष को हम सभी सद्धर्मरुपी नौका में बैठकर जिंदगी रुपी सुख को सद्गुरु रुपी नाविक के हाथ में सौंप दें । इससे जीवन में प्रकाश ही प्रकाश होगा और मोक्षरुपी मार्ग प्रशस्त होगा । विवेकपूर्वक जीवन जीने की कला नूतन वर्ष में सभी को मिले ।

नूतन वर्ष सभी को सुख-शांति आरोग्य प्रदान करने वाला हो, धर्मवर्धक तथा अभ्युदय करनेवाला हो ऐसी भगावन को प्रार्थना । इस नूतन वर्ष में आप सभी का जीवन पवित्र, रसमय, प्रेममय, प्रामाणिक, प्रकाशमय बने जिससे सुवास चारो तरफ पैल उठे । विषम परिस्थिति में भी आप का आत्मश्रेय प्रकाशित हो उठे । इस नूतन वर्ष में हम आत्मज्ञान द्वारा सच्चे अर्थ में ''जीवन सुधा को प्राप्त करने वाले बनें । अपने जीवन का मार्ग परकृपालु परमात्मा सरल तथा सफल बनावें । परमात्मा के बताये मार्ग पर चलने से ही सभी का आत्मकल्याण तथा आत्मश्रेय होगा । इस नूतन वर्ष में कुटुंब में समाज में परस्पर प्रेम बढे, ऐक्य का भाव आवे ऐसी सभी को शुभेच्छा ।

यह दीपोत्सवी पर्व हम इस तरह मनायें कि सामाजिक पारिवारिक प्रेम सुदृढ बने । लोगों में प्रेम बात्सल्य का भाव आवे । भारतीय संस्कृति का अनुपम मूल्य बना रहे । जिसका मूल है - मातृदेवो भव, पितृदेवो भव, आचार्य देवो भव, अतिथि देवो भव ।

जीव हमारी जाति है, मानव धर्म हमारा ।
हिन्दु, मुश्लिम, शीख, इशाई धर्म नहीं कोई न्यारा ॥

सम्पूर्ण परिवर्तन करदेने वाला विज्ञान भले ही सार्वत्रिक सफलता की वात करता हो, लेकिन हृदय की कटुता को तो मात्र आत्मीयभाव, प्रेम, भाई चारे के सम्बन्धसे दूर किया जा सकता है, इसलिये नूतन वर्ष में आध्यात्मिक, तथा धार्मिक जीवन का शुभारंभ करें । सफलता की मूल चाभी है - वाणी की मधुरता तथा कटुता का अभाव ।

उत्सवों का राजा दीपावली । दीपावली पर्व का प्रारंभ संयम के संदेश से होता है । मानव सदा नाना बिधउपाधियों से घिरा होता है । इस जंजाल में से जब वह मुक्त होता है तब उसकी दीपावली है । वही उसके आनंद का दिन कहा जायेगा । दिव्य शक्ति प्रदान करने का संदेश यह दीपावली पर्व देता है ।

श्रीराम लंका पर विजय करके अयोध्या पधारे थे । असुरो के त्रास से प्रजा मुक्त हुई थी । इसलिये आनंद व्यक्त करने के लिये प्रजानेदीपक जलाकर प्रकाशमय वातावरण बना दिया था । उसी समय से दीपोत्सव का प्रचलन हुआ । दिव्य भाव से दीपावली मनाये वही दीपावली होगी ।

नूतन वर्षाभिनन्दन

नूतन वर्षाभिनंदन लखुं, स्नेहथी सादर वंदन लखुं ।
उर उर भरपूर भाव विभोर, पुलकित गीत गुंज लखुं ॥
झड़हले छे घर घर दीपोत्सवी, उज्ज्वलजीवन कवन लखुं ।
उजास अमासनो प्रवेशे भीतरमां, सदाय वास शुभ चिंतन लखुं ॥
पामवा शुभेच्छा बनवुं शुभेच्छक, परस्पर स्नेह मिलन लखुं ।
शुभ संकल्पो साकार थाय सदाय, मंगलमय कामना मनोमन लखुं ॥
विकट संयोग मां विश्वास विभु तो, नित नित नाम पावन लखुं ॥

श्री स्वामिनारायण म्युझियम

श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से

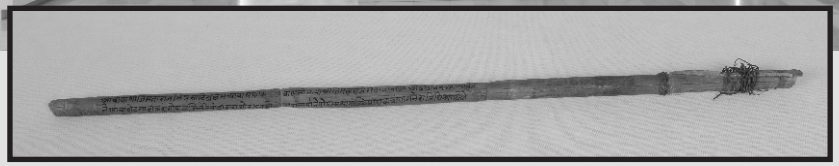

श्रीजी महाराज प्रत्येक उत्सव को प्रत्येक गाँव में करते जिससे सभी सत्संगी उत्सव का तथा श्रीहरि के दिव्य दर्शन का लाभ ले सकें। इस तरह एकबार दंढाव्य देश के कडी के पास आरज गाँव में दीपावली का उत्सव मनाये थे। वहाँ पर तीरंदाजीकी स्पर्धा परंपारगत ढंग से चलती थी। जिस में एक कुशल तीरंदाज रतु खांट को अपनी तीरंदाजी पर गर्व था। अन्तर्यामी श्रीहरि को ऐसा था कि रतु खांट का गर्व उतारना है। इसलिये महाराजने कहा कि तालाब में तैरते दीप की ज्योति पर निशाना लगाना है। इस कार्यक्रम में श्रीरि के पार्षद भगुजी ने अचूक निशाना लगाकर दीपक को बुझा दिया जिससे रतु खांट का अभिमान उतर गया। इसके अलांवा इसी स्थान पर चार नंद संतो को स.गु. का पद देकर गाड़ी में बैठाकर आरती उतारे थे तथा संप्रदाय के सर्व प्रथम अन्नकूट उत्सव की परंपरा यहीं से प्रारंभ किये थे।

उन भगुजी के प्रसादी का तीर तथा अन्य प्रसादी की वस्तुयें श्री स्वामिनारायण म्युजियम के हाल नं. ३ में दर्शनार्थ रखी गयी है।

प.पू. बड़े महाराजश्री के स्ववचनवाली कोलरट्युन मोबाईळ में डाउन लोड करने के लिये अधोनिर्दिष्ट करें।
मोबाईल में टाईप करें : cf 270930 टाईप करें 56789
नम्बर पर : S.M.S. करने से कोलरट्युन प्रारंभ होगा। नोंट : cf टाईप करने के बाद एक स्पेस छोड़कर

श्री स्वामिनारायण म्युजियम मे भेट देनेवालों की नामावलि अक्टुबर-२०१३

रु। ११०००/-	धीरजभाई करशनभाई अमदावाद	रु। ५०००/-	मीनाबहन के. जोषी C/o. घनश्याम इन्जिनयिरींग, बोपल
रु। १०००१/-	हरजीभाई करशनभाईप टेल पौत्र के जन्म दिन के उपलक्ष्य में अमदावाद	रु। ५०००/-	जशीबहन भीखाभाई, राणीप।

सूचना : श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. बड़े महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव की मूर्ति के अभिषेक की नामावलि (अक्टूबर-२०१३)

ता. ४-१०-१३	गिरीशभाई चिमनभाई पटेल (मिरोलीवाला) मणीनगर।
ता. ६-१०-१३	गीताबहन भूपेन्द्रभाई पुजारा चि. किंचन बहन सी.ए. हुई उसके उपलक्ष्य में, नारणपुरा।
ता. ८-१०१३	मनजीभाई शिवजीभाई हिराणी, यु.एस.ए.
ता. १५-१०-१३	कपिलभाई चंदूभाई राबडिया, लंदन
ता. १८-१०-१३	श्रीमहिला मंडल स्वामिनारायण मंदिर हर्षद कोलोनी, बापूनगर.
ता. २०-१०-१३	प्रातः चंदुभाई सोमनाथभाई डेरीवाला, नवरंगपुरा।
	सायंकाल : पटेल जयंतीभाई नारणदास देउसणावाला (यु.एस.ए.)
ता. २७-१०-१३	बसंतीबहन (एक हरिभक्त) कृते अनिषा पटेल पुष्पा पटेल, अमदावाद।

संप्रदाय में एकमात्र व्यवस्था स्वामिनारायण म्युजियम में महापूजा। महाभिषेक लिरवाने के लिए संपर्क कीजिए।
म्युजियम मोबाईल : ९८७९५ ४९५९७, प.भ. परषोत्तमभाई (दासभाई) बापुनगर : ९१२५०४२६८६
www.swaminarayanmuseum.org/com email:swaminarayanmuseum@gmail.com

सत्संग बालवाटिका
संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

अपने इग्यारह नियम
(शास्त्री हरिप्रियदासजी, गांधीनगर)

अपनी सन्तान पर माता पिताका वात्सल्य होता है। फिर भी वह मर्यादित होता है। जब कि अपने भक्त के उपर भगवान का वात्सल्य अमर्यादित होता है। ऐसे वात्सल्यवारिधिस्वामिनारायण भगवान की कृपा से आप सभी भक्तों के जीवन में तथा परिवार में धर्म-भक्ति संस्कार, एकता, पोषण, शिक्षण, सदा प्राप्त होता रहे ऐसी नूतन वर्ष की शुभ कामनाओं के साथ बालवाटिका के वाचक भक्तों को नूतन वर्षाभिनंदन के साथ जयश्री स्वामिनारायण।

विशेष रुप से - नियम - निश्चय - पक्ष इन तीनो को जीवन में दृढ करके भगवान के वात्सल्य के पात्र बनने के लिये ''निर्विकल्प उत्तम अति निश्चय तव घनश्याम'' इस पद में वर्णित इग्यारह नियमों को सविस्तृत समझ रहे हैं। जिस में आठ नियमों की बात हम वालवाटिका विभाग में वांचचुके है। बाकी के तीन नियमों को वांचकर इस अंक में पूर्ण कर देंगे।

(गतांक से चालू)

नवामां नियम - निंदत नहिं कोई देव को :

इस बात को भी ध्यान से समझना चाहिए। आप को जो ठीक लगे उस भगवत्सस्वरुप की उपासना करें। लेकिन किसी देव की निंदा न करें। धार्मिक सहिष्णुता अपने संप्रदाय में कूट कूट कर भरी हुई है। किसी देव की निंदा कभी भी नहीं करने की आज्ञा की गई है, स्वामिनारायण भगवानने शिक्षापत्री में आज्ञा की है कि - रास्ते चलते हुए शिलायादिक देव मंदिर आवें तो आदरपूर्वक प्रणाम करके फिर आगे बढना चाहिये। जिस में विष्णु, शिव, गणपति, पार्वती तथा सूर्य पंचदेव को पूज्य मानना चाहिये। नारायण तथा शिव का एकात्मभाव बनाया गया है। ऐसी धर्म सहिष्णुता की वात स्वामिनारायण भगवानने अपने आश्रितों के लिये कही है। किसी मुमुक्षु के मुख से किसी भी देव की निन्दा नहीं होनी चाहिये।

एक गाँव के चौराहे पर युवान बैठे थे। अति वृद्ध दादा वहाँ से निकले। गिरते-गिरते चल रहे थे। उन सभी युवानों में से पांच-सात लड़के वृद्ध की मजाक करते हुये कहने लगे। देखो वह कैसे चल रहा है, अभी उसे कोई धक्का देतो गिर जायेगा। एक बालक चुप चाप बैठा था, उसे देखकर मेरे दूसरेने कहा कि क्यों तू गूंगा बैठा है? उसने कहा अरे भाई ! ए दादा है। देव के विषय में भी कुछ ऐसा ही है। इसलिये धर्मसहिष्णुता यह सबसे बड़ा गुण हैं। गीता में भगवानने कहा है कि - सच्ची श्रद्धा से चाहे किसी भी देव की पूजा करता हो वह भी मैं स्वीकार करता हूँ।

स्वामिनारायण भगवान जब संतो को विचरण करने के लिये भेंजे तब उनसे कहे कि - आप सभी को जब कोई विपत्ती आवे तब हरी घास को दंडवत् प्रणाम करना। हम उसमें रहकर आप सब की रक्षा करेंगे। इसलिये यह ध्यान रखकर हमारे आश्रित कभी भी किसी देव की निन्दा न करें, देवनिंदा के अलांवा भक्त की निन्दा या मनुष्य की निंदा भी कभी नहीं करनी चाहिये।

दसवां नियम - बिन खपतो नहिं खात :

जिस पदार्थ के खाने से अपनी बुद्धि भ्रष्ट होती हो वह वस्तु भी नहीं खानी चाहिये। आप को यह ख्याल आता हो कि यहाँ पर शुद्धता से रसोई नहीं होती है। तो वहाँ पर स्पष्ट मना कर देना चाहिए। जब आहार शुद्ध रहेगा तो अन्तःकरण शुद्ध रहेगा। जिन का आहार शुद्ध नहीं उनका अन्तःकरण शुद्ध नहीं। रेलवे चालू ट्रेन में भोजन बनाकर पैसिंजरो को खिलाता है। लेकिन पाकशाला में जाकर देखें तो सब कुछ एकजैसा होता है। यात्रि से कहकर जाता है आमिस -निरामिक भोजन, लेकिन वहाँ सब कुछ एक समान रहता है। वर्तन सभी एक होते हैं कुछ भी अलग नहीं होता दोनो चीज एक वर्तन में पकाया जाता है। अब आप बताइये ऐसे मे अपना नियम कैसे रहेगा। इसके अलांवा दवा खाना में डोक्टर रोगी की तपास करके हाथ साबुन से धोता है। आपरेशन के समय भी वह हाथ साबुन से धोता है। आपरेशन के यन्त्र को गरम पानी में डालकर उपयोग किया जाता है। जब कि होटलों में लारियो में आप देखेंगे तो वहाँ पर चाहे जैसा भी रोगी थाली में भोजन किया हो पानी में बोरकर भोजन की थाली परोस दीजाती है। इस तरह के भोजन से आप के स्वास्थ्य पर कैसा असर पडेगा ?

घर में जो रसोई बनाई जाती है वह प्रेम भाव से बनाई जाती है। जब कि धंधादारी (व्यापारी) के यहाँ जो रसोई तैयार होती है वह स्वार्थ - व्यापार के लिये होती है, उसमें प्रेम नहीं होता है। ऐसे अन्न विचारों को मलिन करते हैं। भोजन के विषय में वर्णाश्रम - धर्म का भी ख्याल रखना आवश्यक होता है। इसलिये ११ नियमों में यह नियम समाया हुआ है। ''बिन खपतो नहिं खात।''

इग्यारहवां नियम - विमुख जीव के वदन से, कथा सुनी नही जात :

जिस मनुष्य के जीवन में भक्ति तत्व नहीं है, जो स्वयं व्यसनी हो, धर्म से विमुख हो, जिसके मुख से भगवान या भगवान के अवतारों या उनके लीलाचरित्रों का युक्ति पूर्वक खंडन होता है ऐसी कथा को न सुनने के लिये महाराज ने आज्ञा की है। यही सत्य भी है। जिस व्यक्ति के जीवन में भगवान की भक्ति या उपासना न हो उस व्यक्ति के मुख से भगवान की कथा भी नहीं सुननी चाहिए। इसका मतलब यह कि ऐसे मनुष्य से सदादूर रहना चाहिये। जिसे भगवान में प्रेम हो वह चाहे जैसा भी हो रोगिष्ट बुड्ढा हो, फिर भी उसके मुख से भगवान की कथा सुनने से सार्थक है। अन्य की कथा निरर्थक है। ऐसी कथा सुनने से फायदा या लाभ नहीं होता।

स्वामिनारायण भगवान जब छोटे थे तब अयोध्या में सरयू में स्नान करके देव मंदिरो में दर्शन करने जाते थे। इसके बाद जहाँ कहीं भी कथा होती वहाँ जाकर कथा सुनते। एकबार कथा चल रही थी, उस में प्रभु जाकर बैठ गये। एकादशी की कथा चल रही थी। लेकिन जो वक्ता थे उन्हें एकादशी का व्रत अच्छा नहीं लगता था। संयोगवश उसी दिन एकादशी थी। वक्ता प्रातः रोटी खाकर आये थे। अब वे मंच पर कथा करते समय कहने लगे कि एकादशी की वात सत्य हैं लेकिन भगवान ने एकादशी को जगन्नाथपुरी में बांधदिया है। इसलिये एकादशी न करें तो भी चलेगा। यह सुनकर भगवान स्वामिनारायण ने उन्हें समाधिकराई। वक्ता महोदय को यथार्थ ज्ञान होने पर सबके सामने माफी मंगवाये। कहने का मतलब यह कि जिसके जीवन में आचरण, भक्ति, धर्म नहीं है उसके मुख से कथा नहीं सुननी चाहिये। इसीलिये लिखा है कि ''विमुख जीव के वदन से कथा सुनी नहीं जात'' यह भी इग्यारह नियम में समाविष्टहै।

''एही धर्म के नियम में, वर्तो सब हरिदास।
भजो श्री सहजानंद पर, छोडी और सक आस॥
रही एकादश नियम में करो श्रीहरि पर प्रीति।
प्रेमानंद कहे धाम में जाओ निसंक जगजीति॥

इस तरह इग्याह नियम का पालन करते हुए श्री स्वामिनारायण भगवान की भक्ति करेगा वह किसी भी शंका के विना निश्चित भगवान के धाम में जायेगा।

प्रिय भक्तजन ! इन इग्यारह नियम में सभी पंच वर्तमान समाविष्ट हैं। इन उपरोक्त इग्यार नियम का सतत ध्यान करते रहना चाहिये। जिससे श्रीहरि की आज्ञा का अनुपालन होता रहेगा। इसी का ध्यान रखकर प्रेमानंद स्वामीने लिखा है कि - ''निर्विकल्प उत्तम अति'' इत्यादि पद में सारा भाव समाया हुआ है। जिसे हम सभी प्रतिदिन सायंकाल की प्रार्थना में बोलते हैं।

(सम्पूर्ण)

●

एक साथे दो काम सिद्ध हुए
(साधु श्री रंगदास - गांधीनगर)

अजब की वात है। वैसे मानना बड़ा कठिन है। फिर भी मानना पड़े ऐसा है। इसलिये कि - यह वात कहने वाले ऐसे तैसे नहीं है, बल्कि अपने नंद संत है। एकबार श्रीजी महाराज झिंझावदर पधारे छे। झिंझावदर अलैया खाचर का गाँव था। वहाँ पर एक तालाब था। उसके किनारे पीपल का एक विशाल वृक्ष था। श्रीजी महाराज उसी के नीचे बिराजमान थे। उनके पास अलैया खाचर, सुरा खाचर, सोमला खाचर, नांजा जोगिया, मूलजी शेठ इत्यादि भक्त बैठे थे। सभी प्रश्नोतरी कर रहे थे। उसमें अलैया खाचर ने प्रश्न किया, हे महाराज ! हमारे दादा बड़ें हिंसक थे। पापी थे। वे बहुत अपराधकिये थे। चोरी-लूंट इत्यादि में अग्रसर थे। किसी पर दया नहीं करते थे। बहुत क्रोधी थे। उनकी गति हुई होगी या नहीं ? मैं आप का भक्त हूँ। आप रस रुप में मिले लेकिन वे अब यहाँ है नहीं तो उनके जीव का क्यां होगा। हमारा तो आप कल्याण कर देंगे। क्या मेरा भजन के प्रभाव से वे आपके धाम मे गये हैं या नहीं ? महाराजने कहा कि आपके जैसे बेटे हो तो दादा-पिता सभी धाम में ही जायेंगे न ? आपकी भजन, भक्ति, सेवा के प्रभाव से वे धाम में गयें है। अलैया खाचर को शंका हुई, इसलिये पुनः कहे कि, आपको परीक्षा करनी हैं ? यह सुनकर अलैया खाचर प्रसन्न हो गये। हाँ महाराज, हमें धाम का दर्शन करना है।

महाराज एक भक्त से कहे कि तुम जाकर देख आओ कि कितने वृद्धों की धाम में लाईन लगी है। प्रभु का चमत्कार

पेईज नं. २७

भक्तिसुधा

प.पू.अ.सौ. वादीवालाजी के आशीर्वचन में से
"अंतदृष्टि रखनी चाहिए"
(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

एक गाँव में बहुत बड़े जमीनदार किसान थे। उनका गाँव में बहुत बड़ा खेत था । उस में कई प्रकार के फल तथा साकभाजी होते थे। एकबार जमीनदारने अपने सामने सभी लोग देख पाये उस प्रकार सब कुछ रख दिया। और कहा कि जिसको चाहिए वह मुफ्त में ले जाये। लोगो को शंका हुई की शायद यह सब बिगड़ा होगा। इसलिए कोई नहीं ले जा रहा। उसके बाद बेचने के लिए बोर्ड लगा दिया जो भी कुछ बिक रहा है वह उत्तम गुणवत्ता का होने के कारण महंगा है ऐसा लिखकर दीवार पर लटकवा दिया । सस्ता है तो भी उसे खरीदने के लिए लाईन लगती है। इसका अर्थ यह की वस्तु मुफ्त में मिलती है तो लोगो को शंकाए होती है । अपने नरनारायणदेव समग्र भरतखंड के राजा है । वे स्वयं तप करके अपने तप का फल हमको मुफ्त में देते हैं। फिर भी हम उसे नहीं समझ सकते है । श्री लालजी महाराजश्री तथा महाराजश्री के आशीर्वचन हम बारंबार सुनते हैं कि हमारी एक-एक श्वास नरनारायणदेव को आभारी है। घर बैठे ही सब कुछ मिल जाने के कारण उसकी किंमत नहीं समझ में आती है। हमको क्यां नही मिला उससे अधिक हमें क्या प्राप्त है उसके बारे में सोचना है। हमें सत्संग प्राप्त हुआ है। परिस्थिति अनुसार बुद्धि बदलती जाती है हमारी । कभी निष्ठा मे नहीं चूकना चाहिए। हम जो करते हैं वह हमे करना चाहिए यदि न करने वाले कर्म करने लगे तो अपने आपको रोकना चाहिए। जैसे कि किसी स्कूल में बच्चे पढाई करते हैं। और शैतानी करने वाले को प्रिन्सीपाल डांटते हैं । उसी प्रकार नियंत्रण होना चाहिए । सदैव पांच-दस मिनिट आत्मचिंतन करना चाहिए कि मुझ में क्या कमी रह गयी है । महाराजने अपने दोषो को देखने के लिए मना नहीं किया है। परंतु दूसरो के दुर्गण नहीं देखने चाहिए। स्वयं का मन दूसरो के विषय में सोचने से अशांत होता है। जब हम नकारात्मक सोंच रखते हैं तो मन तीर गति से काम करता है। उस समय सही या गलत की समझ नहीं आती है। इसलिए जहाँ तक हो सके दूसरो से के दोस के बार में नहीं सोचना चाहिए। किसीने यदि अच्छा किया है तो जल्दी याद नहीं आता लेकिन किसीने कुछ बुरा किया है तो वह त्वरित ज्ञात हो जाता है। अच्छा करने में बहुत समय लग जाता है। इसीलिए अपना हित किस में है इसके बारे में सोचना चाहिए तथा नरनारायणदेव की आज्ञा में रहना चाहिए। क्योंकि यहाँ से बाहर नीकलेंगे तो आधे सेंकड में हमारे साथ क्या होने वाला है यह हमारे बश में नहीं है। एकबार नरनारायणदेव ने सभी संतो से अपना सामर्थ बताने को कहा तो सभी संतोने अपना सामर्थ्य बताया तथा सद्गुरु गोपालानंद स्वामीने कहा कि समग्र ब्रह्मांड में धूमकर देखा तो प्रभु की आज्ञा में ही रहना चाहिये। उन्हीं की आज्ञा में आनंद है। कहने का अर्य कि सद्गुरु गोपालानंद स्वामी जैसे समर्थ संत महाराज की आज्ञा में रहते है तो हम तो इस संसार के सामान्य जीव है। यही सुखी होना है तो अहर्निश महाराज की आज्ञा का अनुसंधान रखना चाहिए। श्री नरनारायणदेव की आज्ञा में रहने का बल आप को महाराज प्रदान करें ऐसी महाराज के चरणों में प्रार्थना।

●

अभागीन ईर्ष्या
- सांख्ययोगी कोकिलाबा (सुरेन्द्रनगर)

श्री स्वामिनारायण भगवानने स्वमुख से वचनामृत ग्रंथ में प्रथम प्रकरण के ७१ वें वचनामृत में ईर्ष्या कि व्याख्या कि है कि, "जिस के ऊपर इर्ष्या न हो उसका भला हो और उसको सहन न करने वाले का बुरा होने पर प्रसन्न हो वही ईर्ष्या का लक्षण है । अर्थात् ईर्ष्या करने वाला किसी का बड़प्पन नहीं देख सकता। इर्ष्या एसी वस्तु है कि जिसके में है वह अपने दुःख से दुःखी न होकर दुसरे के सुख से दुःखी होता है। सामने वाले व्यक्ति को कोई परेशानी हो या समाज में उसकी अपकीर्ति हो तो ईर्ष्यालु को आनंद अनुभवित होता है। इर्ष्या विढा समान है। जिस प्रकार फूल के बगीचे में जंगली धाम होती है। उसी प्रकार मनुष्य के मन में ईर्ष्या का जन्म होता ही है। इर्ष्या का अंत सदैव विनाश तथा आधोगति में ही होता है। एक बार गुलाब ने कांटे से कहा कि, "मुझे तूं यह बता कि, जो लोग यहाँ से जाते है तु उनके कपड़े क्यो फाड़ देता है ? तो कांटने उत्तर दिया, "कि वह कपड़े मेरे कोई उपयोग में नही आते, परंतु उनके सुंदर वस्त्र देखकर इर्ष्या आती है इसीलिए फाड़ देना चाहता हूँ।" इर्ष्या रखने वाला कांटे समान होता है। वह किसी का लाभ नही सोचता

परंतु दूसरो को कैसे नुकसान पहुंचाये यही सोचता है। संक्षेप में ईर्ष्या का अर्थ किसी की प्रगति बर्दाश न करना, जलन, आदि है।

ईर्ष्या मनुष्य के हृदय के आंतरिक सद्‌गुणों को खा जानेवाला जंतु है। जींदगी का आराम हराम कर देती है। किसी को धन-मान प्राप्त हो, पुत्र का जन्म हो, किसी प्रकार का लाभ हो प्रगति हो तो हृदय में याद उत्पन्न होती है ? ईर्ष्या एक प्रकार का अग्नि है। अग्नि से भी अच्छी उसकी ज्वालां प्रचंड होती है। परंतु उसकी ज्वाला दिखाई नहीं देती। तो भी सर्वस्व नाश करने में समर्थ है जिसके अंतर में ईर्ष्या का वास हो उसके सारे सद्‌गुणों का नाश हो जाता है। इर्ष्यालु व्यक्ति आग से राख होने के कारण उसका वजन कम होने से हलका हो जाता है। वजन रहित प्रतिष्ठारहित हो जाता है।

ईर्ष्यालु का पाप स्वयं के गुणों को नहीं देखने देता और दूसरो को गुणों का मूल्य नहीं कर पाता। ईर्ष्या रखने के कारण एकबार खाई में गिरा हुआ मनुष्य बाहर आ सकता है परंतु किसी के भी निकालने पर भी इर्ष्यालु बहार नही आ सकता। इर्ष्या कभी शांत नही बैठती है। अपना जहर हर जगह फैलाती है। सन्मान, एकत, हंकार को नष्ट करके परिवार, संस्था, मंडलो में बटवारा कर देती है।

जो अभिमानी है उसके हृदय में क्रोधईर्ष्या अवश्य होगी। क्रोध-ईर्ष्या मान के कारण आती है। अभिमान रुप पिता का एक पुत्र, क्रोधतथा एक पुत्री इर्ष्या है। हृदय की शांति तथा संतोष निर्मल जीवन का प्रतिबिंब है। ईर्ष्या संकुचित मन की सड़न है। इस से बड़े-बड़े ऋषि मुनि तथा ल्जित हो जाते हैं।

जो योगेश्वर एक बार जनक राजा के दरबार में गये। जनकराजाने उनसे प्रश्न पूछे। प्रत्येक उत्तर किये गये। उसमें से प्रबुद्ध ऋषिने सचोट, सरल तथा सच्चे उत्तर दिये। दूसरे आठों ऋषि कमजोर साबित हुए। आठो ऋषिओं के मन में हुआ कि प्रबुद्ध ऋषी आगे निकल गये। वे जब प्रवचन देते तो सभा पूर्णरुप से भर जाती। उनमें ऐसी वाक्यटुता थी। श्रोतागण बाकी ऋषिओं से अधिक प्रबुद्ध ऋषि भी सभा में हाजर होते थे। एकं दिन आठों ऋषि प्रबुद्ध ऋषि को कूए में फेंकने गये। उन्होंने पूछा आखिर मेरा कसूर क्या है इस प्रकार पूछा तो उतर दिया कि आप में सभी लोग आकर्षित हो जाते हैं। हमारे पास तो कोई नहीं आता है। हमारा अपमान होता है। प्रबुद्ध ने कहा कि, ''मुझे एकबार माफ कर दो। अब मैं सभा में बाते नही करुंगा।'' तब जाकर वे जिवीत रह पाये।

गातुं होय कोई हरिना गुण
तो तेरा ताल तुं तोडीश मां,
एनी साते तुं पण गाजे,
जीवन तारुं बगाडीश मा

कोई भगवान के गुण गान करें तो प्रसन्न होना चाहिए उसमें विध्न डालकर दोषी नहीं बनना चाहिए। ईर्ष्या की आग क्या नहीं करती एक योगेश्वर दूसरें योगेश्वर को मारने का उपाय तक करवाती है। यहाँ तक कि प्रभु को मारने का भी उपाय करवाती है।

श्री स्वामिनारायण भगवान गढपुर में सदैव निवास करके रहते थे। गाँव में उनके अनन्य आश्रित दादा खाचर तथा जीवा खाचर थे। श्री स्वामिनारायण भगवान दादा खाचर के यहाँ संत-हरिभक्त वहाँ रहते थे। ईसिलए जीवा खाचर ने ईर्ष्या की आग में न करने का कार्य किया श्रीजी महाराज को प्रातः मारने के लिए पैसा देकर रामखाचर को भेजा। संडास में जाकर इस कार्य के लिए छुप गये। परंतु भगवान तो अंतर्यामी थे। भगवानने अपने अंगत सेवक भगुजी पार्षद को दिया लेकर जांच करने को कहा। अंदर जाकर देखा तो रामखाचर तलवार को लेकर भगवान को मारने के लिये खड़े थे। भगुजीने पकड़कर नीकाला और मारने लगे। तब उन्होंने कुबुल किया कि जीवा खाचर उन्हें पैसे की लालच दी थी। इस अपकृत्य को करने हेतु। श्री स्वामिनारायण भगवान तो दया के सागर थे उन्हों ने क्षमा कर दिया इस प्रकार इर्ष्या कातिल विष समान है।

राजसूप यज्ञ में प्रथम पूजन श्री कृष्ण का होगा यह सुनते ही शिशुपाल ईर्ष्या से जल उठा था। प्रभु के गुणों पर कीचड़ उछालने लगा। यह ईर्ष्यालु के जीवन की तासीर है। दुर्योधन को पांडवो की बहुत ईर्ष्या थी। पांडवोने स्नातको को खिलाया तो उन्होंने प्रशंसा की दुर्योधन को उनकी इर्ष्या हुई। इसीलिए ईर्ष्या का त्याग करना चाहिए। तभी मोक्ष परायण जीवन व्यतीत किया जा सकता है। क्रोधी, कपटी, द्वेषी, अभिमानी के हृदय में ईर्ष्या का लावारस सदैव बहता रहता है। इसीलिए इन चार व्यक्तियों से सदेव दूर रहना चाहिए।

कंचन तजवो स्हेल है, स्त्रीया तजवी सहेल।
आप बड़ाई ने इर्ष्या, ते तजवुं मुश्केल ॥

●

भक्तवत्सल भगवान

- पटेल भावना एन. (मुबारकपुर, कलोल)

गाँव मेथाण में महाशंकरभाई पंचोली हरिभक्त रहते थे। उनको राजारामनाम का एक पुत्र था। राजाराम को महाराज

का चरण स्पर्श करवाना था। उस समय महाराज लोया गाँव में थे बाप-बेटा दोनो वहाँ जाते हैं। उनके पास १०/- रुपये थे। महाशंकरभाई ने निश्चित किया था कि ५/- रुपये महाराज के चरण में रखना है और ५/- पांच रुपये में संतो को रसोई देनी है।

इधर महाराज लोया से निकल गये। कुछ दूर पहुंच गये थे। वहाँ जाकर एक घर में आराम कर रहे थे। लेकिन वहाँ के ग्रामवासियों को इसकी खबर नहीं थी। उनलोगो को केवल इतनी ही खबर थी कि महाराज बाहर गये हैं। महाशंकरभाई जब आये तो उनसे कहा गया कि महाराज बाहर गये हैं। यह सुनकर महाशंकरभाई उदास हो गये। उनके मन में हुआ कि कितना दूर चलकर आये लेकिन महाराज का दर्शन नहीं हुआ। महाराज जिस घर में छिपे थे वहीं पर महाशंकरभाई रुके हुए थे। लेकिन उन्हें यह पता नहीं था। ब्राह्मण देवता को चिन्तन में ही पूरी रात बीत गयी। भगवान भक्त की पूरी बातजानते थे। इसीलिये महाराज मनुष्य लीला करते हुए सुरा खाचर से पूछे कि उस घर में कौन आया है। सुरा खाचरने कहा महाराज ? मेथाण के एक ब्राह्मण है, आपके दर्शन के लिये आये हैं। महाराजने कहा कि उन्हें बोलाइये। सुरा खाचर उन ब्राह्मण देवता के पास आकर कहे कि चलिये आप को महाराज दर्शन के लिये बुला रहे हैं। यह सुनकर ब्राह्मणने कहा कि यहाँ महाराज कहाँ है ? मै कल सुना था कि महाराज बाहर गये हैं। इसीलिये रात भर मुझे नींद नहीं आयी। लेकिन दयालु दया अवश्य किये। बाप-बेटे दोनो जाकर महाराज का दर्शन करते हैं, उनके आनंद की सीमा नहीं रहती है। महाराजके चरण में ५/- रुपये भेंट में रखते हैं। दूसरे ५/- रुपये की वात महाराज कहते हैं उसे भी संतो की रसोई के लिये भेटं कर दीजिये।

प्रिय भक्तों ! भगवान कितना भक्तवत्सल है, वे बाहर के गाँव में गये थे लेकिन भक्त के लिये वहीं आकर रहे लेकिन भक्त को ख्याल नहीं आया। ऐसा हम सभी के जीवन में होता है। हमारे बगल में भगवान रहते हैं और हम उन्हें पहचान नहीं पाते हैं। फिर भी ब्राह्मण की तरह उत्कट प्रेम भाव होगा तो प्रभु उसके पास आकर दर्शन अवश्य देंगे। भगवान तो भाव के भूखे हैं। ब्राह्मण का अच्छा भाव था जिससे रात भर प्रभु के स्मरण में नींद नहीं आयी, जिससे सुबह होते ही प्रभु को स्वयं भक्त को दर्शन देने के लिये बुलाना पड़ा। यही भाव हम सभी में होना चाहिये।

●

प्रभु बंधते नहीं है
- जानकी निकीकुमार पटेल (घाटलोडीया)

घनश्याम तथा वेणी दोनो पक्के मित्र थे। जहाँ देखें वही पर दोनो साथ रहते।

मित्रता के कारण दोनो छुपकर अपने घर में चोरी करने लगे। चोरी में अन्य कुछ नहीं मात्र घी-दूध-दहीं। वेणीराम की माता लक्ष्मीबाई को ऐसा होता कि मेरा बेटा ऐसा नहीं करेगा यह कार्य घनश्याम का है। उधर सुवासिनी भाभी को होता कि हमारा घनश्याम तो बड़ा सीधा है वेणी पर कोई भरोसा नहीं है। चोरी से दूध-दहीं खा जाता होगा।

दोनो परिवार में एक दूसरे पर शंका का स्थान हो गया। लेकिन पथार्थ तो यह था कि दोनो को दूध-दहीं खूब प्रिय था। इसलिये दोनो साथ मिलकर जिस घर में भाग मिलता उसी घर में घुस जाते थे। यह कब तक चलता। एकदिन लक्ष्मीबाई का धैर्य टूट गया और उन्होंने साफ कह दिया कि घनश्याम चोरी करते हैं। मेरे घर में घुसकर सबकुछ खाजाते हैं। लेकिन मेरा वेणी तो इस तरह का वर्तन कर ही नहीं सकता।

यह वात भाभी से सहन नहीं हुई, वे कहने लगी, जो चाहें वह बोल रही है यह ठीक नहीं। आरोप लगाते समय विचार करके बोलिये। हमारा घनश्याम इतना अच्छा है कि भोजन देने पर भी भोजन नहीं करता, भूखे रह जाता है। इतना सरल है। आप का वेणी चोर है घर में घुसकर दूध-दही पी जाता है।

इस तरह आरोप प्रत्यारोप आपस में होने से लक्ष्मीबाई क्रोधसे आगबबूला हो गयी। घनश्याम को चोर साबित करने के लिये कोई अवसर नहीं छोड़ी। बाद में सुवासिनी भाभी ने कहा कि अब मेरा घनश्याम आपके यहाँ चोरी करने आवे तो बांधदीजियेगा।

जब तक प्रमाण न मिले तब तक बोलना व्यर्थ है। मैं घनश्याम को अब बांधकर रखूंगी, और साबित करके रहूँगी। ऐसा कहते-कहते घर में चली गयी। इस तरह दो-तीन दिन बीत गया। वे दोनो पुनः एकलीला किये। दोनो मित्र वेणी के घर में घुसे, दूध-दहीं खूब खाये। उसी समय वेणी की मां भीतर आयी लगे हाथ पकडली। अपने बेटे को जाने दी और घनश्याम के दोनो हाथ को बांधदी। दोनो हाथ-मुख दहीं से सना हुआ था। बाद में लक्ष्मीबाई को दूपरे गाँव को एकत्रित कर दीं। देखो में घनश्याम को लगे हाथ पकडी हूँ आप लोग प्रत्यक्ष देख सकती है, इतने में देखते-देखते पूरा गाँव एकत्रित हो गया।

बड़े भाई रामप्रतापजी घर होते तो अच्छा होता है रहता।

परंतु वे उस समय बाहर गये थे । सुवासिनी भाभी तथा भक्तिमाता वेणी के घर पहुँचे । वहाँ बड़ा कोलाहल चालु था । भाभीने कहा बताओ कहाँ है । हमारे घनश्याम ? लक्ष्मीबाईने रुआब से घर् का दरवाजा खोल दिया । देख लीजिए लाला को मैं कह रही थी न, कब से आप मान हीं नहीं रहे थे ?

वहीं भीड़ में ही हंसी होने लगी । सभी को मनोरंजन मिल गया । देखा ! इस लक्ष्मीबाई की बुद्धि घूम गयी है । देख नहीं रही है कि यह किसका लड़का है ।

सुवासीनी भाभी ने कहा कि, लक्ष्मीबाई, जानबूझ कर घरकी इज्जत क्यों खराब कर रही है । जरा आँख खोलकर देखिए कि आपने किसको बांधकर रखा है । हमारे घनश्या है कि आपका वेणी ? भीड में खड़े आदमिओं से हंसी रुक ही नहीं रही थी । और लक्ष्मीबाई एकदम आश्चर्यचकित हो गयी । मैने तो घनश्याम को ही बांधरखा था । इस में वेणी कहाँ से आ गया । आदमियों की भीड़ में खड़े मुश्कुराते हुए घनश्याम को देखा । छपैयावासियों को आनंद मिला ।

●

छपैया की प्रदक्षिणा

– पटेल लाभुबहन मनुभाई (कुंडाल, ता. कडी)

तीर्थराज छपैया में घनश्याम महाराजने कई लीला की है । यह एक चरित्र सी बात आपको पसंद आयेगी । घनश्याम महाराज मित्र मंडल के साथ नारायण सरोवर के किनारे में आम के बागीचे में गये । गलियों पर दोनो पैर लटकाकर बैठे थे । और घोड़े पर बैठे हो ऐसे आवाज नीकल रहे थे । किसका घोडा तेज चल रहा है इसकी प्रतिस्पर्धा लगी थी ।

घनश्याम महाराज एक डाल पर बैठे की उसी समय एक घोड़ा . आप के पेड़ में से प्रगट हुआ । बहुत सुंदर घोड़ा था । प्रभु उसी घोडे पर बैठ गये और छपैया के आसपास परिक्रमा करने लगे । १०८ परिक्रमा के बाद प्रभुने घोड़े को धीमा कर दिया । छपैया की स्त्रियाँ नारायण सरोवर में पानी भरने आयी घोड़ के पीछे चल दी । कुछ ब्राह्मण वहाँ पूजा-पाठ करने आये थे वे भी उसके पीछे चल दिये ।

जैसे-जैसे अश्व चलता जा रहा था मेदनी बढती जा रही थी । उसके बाद तो डुगंर तरवाडी का कुँआ, खांपा तलावडी के आदमी, सभी इसी संघ में जुड़ गये । घनश्याम महाराज में ऐसा आकर्षण था कि सभी लोग उनके पीछे चलने लगे मानो कोई संघ की सवारी नीकली हो । भगवानने ऐसे संघ के साथ १०८ परिक्रमा की ।

भगवानने छपैया की परिक्रमा की तब से छपैया की परिक्रमा की बहुत महिमा है । इसीलिए जब भी छपैया आये में निम्न लिखित गाँवो की मुलाकात अवश्य करें ।

सुरवाल, तीनवा, दाननगर, असलारा, भाईगाम, गायघाट, लोहगंजरी, पत्रिणीया, नागपुर, नेवद्र, तथा छपैया । परिक्रमा करने पर इतने गाँव बीच में आते है । यह तो बड़ी परिक्रमा है । छोटी परिक्रमा करनी हो तो मात्र छपैया की ही की जा सकती है । घनश्याम महाराजने जिस तीर्थ की परिक्रमा की उसकी परिक्रमा हमें भी करनी चाहिए ।

अनु. पेईज नं. २३ से आगे

अभाव होता है । अलैया खाचर ऐसा मान लिये थे कि मेरे दादा हिंसक थे, इस लिये धाम में नहीं गये होंगे । लेकिन महाराज तो उनकी कई पीढी को तार दिये थे । महाराज उस भक्त को अपने धाम में भेजा और कहा कि वहाँ से कुछ चिन्ह लाना अन्यथा यह काठी दरबार नहीं मानेगा । वहाँ जाकर भक्त ने देखा तो अलैया खाचर के पूर्वज सात पीढी तक महाराज के धाम में बिराजमान थे । सभी से कहे कि मुझे महाराज ने अलैया खाचर के लिये आप सबकी पहचान मंगवाया है । अलैया के दादा ने कहा कि महाराज जिस नीम वृक्ष के नीचे बैठते हैं उसके उत्तर की तरफ सात हाथ नीचे नवसौ रुपये गड़े हैं । उसे निकाल कर ले लेना ।

निशानी लेकर अलैया खाचर समाधिसे जगे और वात करने लगे । श्रीजी महाराज ने अलैया के दादा ने जो संदेश दिया था उसी के आधार पर खोदा गया तो नव सौ रुपये निकले उसी के आधार पर महाराजने कहा कि आपके सात पीठी के पूर्वज धाम में चले गये है । यह सुनकर अलैया खाचर के आंखों में आनंद के आंसू बहने लगे । महाराज के चरणारविंद में गिरकर कहने लगे, हे प्रभु ! आपकी कृपा अपरंपार है, आप धन्य हैं ।

सज्जनो ! वचनामृत में भी यह बात उल्लिखित है कि जो भगवान का भक्त है वह भक्ति के प्रताप से ७१ पीठी को मुक्त कर देता है । आत्मसर्पित भाव से भगवान की भक्ति करनी चाहिये । जिससे इसलोक तथा परलोक में सुख-शांति मिले । मुक्तानंद स्वामीने लिखा है कि –

पुरुषोत्तम प्रगटनुं जे दरशन करशे ।
काल कर्म थी छुटी कुटुंब सहित तरशे ॥
जयसद्गुरु स्वामी

सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद में शरदोत्सव मनाया गया

श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद कालुपुर में अश्विनी शुक्लपक्ष-१५ ता. १८-१०-१३ को प्रत्येक वर्ष की तरह शरदोत्सव धूमधाम से मनाया गया । मंदिर के प्रसादी के प्रांगण में सुंदर श्वेत वस्त्रो से अलंकृत सुंदर शोभायमान मंडप में स्टीलनेस स्टील के वर्तनो के मध्य में सुंदर सिंहासन पर श्रीहरि को बिराजमान करके श्री नरनारायणदेव उत्सवी मंडल द्वारा उत्सव किया गया । संतो-हरिभक्तों की सुंदर सबा में प.पू. महाराजश्री दर्शन देते हुए बिराजमान हुए थे । ओच्छव की पूर्णाहुति के अंत में उनके वरद हाथों से ठाकुरजी की आरती की गयी । अंत में सभी ने दूधपौआ का अलौकिक प्रसाद ग्रहण किया । स.गु. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी तथा कोठारी पार्षद दिगंबर भगतने सुंदर व्यवस्था का आयोजन किया ।

(शा.स्वा. नारायणमुनिदास)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया (रामबाग)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद तथा स.गु. महंत शा.स्वा. गुरुप्रसाददासजी तथा मंहत स्वामी आनंदप्रसाददासजी की प्रेरणा से भादो-शुक्लपक्ष श्राद्ध में श्री नरनारायणदेव युवक मंडलने हरिभक्तों के वहाँ शामको ३ घंटे तक कथावार्ता का लाभ दिया । अमावास्या को एक हरिभक्त ने यहाँ कथा की पूर्णाहुति की गयी । उसी प्रकार बहनो के नरनारायणदेव युवक मंडल ने भी १९ दिववस तक बहनो के घर कथा-वार्ता धून भजन का लाभ दिया । सभा भक्तों को प्रसाद खिलाया गया । (श्री नरनारायणदेव युवक मंडल, कांकरिया)

श्री स्वामिनारायण मंदिर वडनगर

वडनगर श्री स्वामिनारायण मंदिर में सावन-शुक्लपक्ष से भादो शुक्लपक्ष-१५ तक श्रीमद् भागवत कथा पारायण ८-३० से १० और रात्रि ७ से ८-३० तक स.गु. कोठारी शा.स्वा. विजयप्रकाशदासजी (वडनगर) के वक्तापद पर सम्पन्न हुई । पूजारी शास्त्री स्वामी अभिषेकप्रसाददासजी ने जन्माष्टमी, जलजीलणी तथा वामन जयंती जैसे उत्सवो को मनाकर हरिभक्तों को प्रसन्न किया था । हरिभक्तों के घर सत्संग सभा का आयोजन करके आचार्य महाराजश्री तथा संत हरिभक्तों के प्रति निष्ठा तथा हरिलीला चरित्रों को समझाकर सत्संगियो को भावविभोर किया गया था ।

(महंत नारायणवल्लभदासजी वडनगर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर वावोल

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ के मंदिर में भाद्र कृष्ण-११ से अमावास्या तक श्राध्धपक्ष के निमित कथा पारायण रात्रि ७-३० से ९-३० तक स्वा. नारायणवल्लभदासजी को वक्ता पद पर सम्पन्न हुई थी । स्वा. अभिषेकप्रसाददासजीने कथामृत पान कराकर हरिभक्तो को प्रसन्न किया था । कथा नी पूर्णाहुति धामधाम से की गयी थी । यहाँ के युवान तथा वृद्द सभी सेवाकिये तथा कता श्रावण का लाभ लिये । (श्री न.रा.यु.मं. तथा अनीलभाई सी. पटेल, वावोल)

अलौकिक चमत्कार

हरिभक्तों को धर्मकुल में खूब निष्ठा है । इसका एक उदाहरण अपने प.पू. महाराजश्री के ४१ वर्षोत्सव के प्रसंग पर गांधीनगर पटेल रमेशभाई धनाभाई रामकथा मैदान में उत्सव के पूर्व बरसात हो रहा था । बहुत सारे हरिबक्त सेवा में लगे थे । जिस में उपरोक्त हरिभक्तोने चैतन्य स्वामी से आकर कहा कि स्वामी १३-१० दशमी के दिन वरसात नहीं आयेगा तो हम पूर्णिमा के दिन पैदल चलकर श्री नरनारायणदेव का दर्शन करेंगे । इस प्रार्थना को प्रभु ने सुनलिया और बरसात की पूर्णाहुति हुई । जन्मोत्सव भी धूमधाम से मनाया गया । संकल्प पूर्ण होने से भक्त ने भगवान श्री नरनारायणदेव का पैदल चलकर दर्शन किया और धन्यता का अनुभव किया ।

श्री स्वामिनारायण मंदिर जमीयतपुरा

यहाँ के मंदिर में प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी की प्रेरणा से यहाँ की महिला मंडल द्वारा प.पू.ध.धु. आचार्य

महाराजश्री के ४१ वें जन्मोत्सव के उपक्रम में ६ घन्टे की महाधुन की गयी थी। पूर्णाहुति की आरती के बाद सभी को प्रसाद दिया गया था। स्वा. छपैयाप्रसाददासजी ने सुंदर आयोजन किया था। (पार्षद हार्दिक भगत)

श्री स्वामिनारायण मंदिर करजीसण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ के मंदिर में महामंत्र धुन संत हरिभक्तों के साथ मिलकर की गयी थी। साधु माधवप्रिय स्वामीने तथा पुजारी जसु भगतने सभा में श्रीहरि की महिमा को समझाया था।

(पु. जसु भगत)

श्री स्वामिनारायण मंदिर धनसुरा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के ४१ वें जन्मोत्सव प्रसंग पर यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में भाद्र कृष्ण-११ ता. -९-२०१३ को सभी हरिभक्तो के साथ मिलकर २४ घंटे की महाधुन की गयी थी। (को. सोमाभाई)

श्री स्वामिनारायण मंदिर आनंदपुरा सत्संग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से आनंदपुरा गाँव में ता. २९-९-२०१३ को सत्संग सभा का आयोजन किया गया था। जिस में चैतन्य स्वामी, माधव स्वामी, जसु भगत इत्यादिने हरिभक्तों को धर्मकुल की महिमा तथा श्रीहरि का माहात्म्य समझाया गया था। युवक मंडल ने धुन-कीर्तन का सुन्दर लाभ दिया था। टाकिया, डांगरा भाऊपुरा, करजीसण तथा वेदा के हरिभक्तों सत्संग लाभ लिया था। (शा. माधवप्रियदास)

श्री स्वामिनारायण मंदिर नांदोल

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से नांदोल में ता. २०-९-१३ से ता. २२-९-१३ तक महिमा मंडल द्वारा कथा पारायण हुई थी। जिसकी मुख्य जमान गीताबहन धर्मेन्द्रकुमार पटेल थे। सां.यो. भारतीबा, मंजुबा, चंबा बा की प्रेरणा से श्रीमद् सत्संगिजीवन का सांख्ययोगी ने कथा श्रवण कराई थी।

इस प्रसंग पर प.पू. गादीवालाजी पधारकर सभी को प.पू. महाराजश्री के ४१ वें जन्मोत्सव के निमित्त ४१ फुट के चोकलेट का हार पहनाकर आरती उतारी थी। कथा में आपने वाले सभी उत्सव धूमधाम से मनाये जाते थे। वरपक्ष के यजमान परढोल गाँव की बहने कीं। महापूजा में प.पू. बहनोने लाभ लिया था। अन्त में प.पू.असी गादीवालाजीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था। सभी की सेवा प्रेरणा रुप थी। इस प्रसंग में नांदोल, दहेगाँव, परढोल, कुबडथल, लवारपुर, कुहा, कनीपुर साणोद गाँव की बहनोने लाभ लिया था।

(श्री स्वामिनारायण महिला मंडल, नांदोल)

धरमपुर (खारवरिया) गाँव में पू. महाराजश्री के ४१ वे प्रागट्योत्सव को मनाया गया

यहाँ के मंदिर में ता. १३-१०-१३ को विजया दशमी के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के ४१ वें प्रागट्योत्सव को हरिभक्तों ने बड़े उल्लास के साथ मनाया था। जिस में प.पू. महाराजश्रीकी तस्वीर के समक्ष ४१ जनमंगल पाठ ४१ मिनिट तक धुन ४१ वचनामृत पाठ करके ठाकुरजी की आरती की गयी थी। सभी प्रसाद लेकर स्वस्थान प्रस्थान किये थे।

(श्री नरनारायणदेव युवक मंडळ धरमपुर)

विदेश सत्संग समाचार

केनेडा श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू. महाराजश्री का ४१ वाँ प्रागट्योत्सव मनाया गया

श्रीहरि के अपर स्वरुप प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का ४१ वाँ जन्मोत्सव टोरन्टो केनेडा के मंदिर में धूमधाम से मनाया गया। इस प्रसंग पर ४१ जनमंगलपाठ १४१, धन्टे की महामंत्र धुन, महापूजा इत्यादि कार्यक्रम रखे गये थे। विजया दशमी के दिन सभा में स्वा. भक्तिनंदनदासजी (जेतलपुरधाम) ने श्रीजी महाराज तथा दर्मकुल का महत्व समझाया था। सभी ने केक काटकर बड़े उल्लास के साथ जन्मोत्सव को मनाया था। सभा में प्रमुखश्री, सभी कमेटी के सदस्य स्वा. भक्तिनंददासजीने प.पू. महाराजश्री की तस्वीर का पूजन करके आरती उतारी थी। बाद सभी को प्रसाद दिया गया था। (शशीकांतभाई)

श्री स्वामिनारायण मंदिर साउथजल्सी में जलझीलणी उत्सव

आई.एस.एस.ओ. श्री स्वामिनारायण मंदिर साउथजर्सी में जलझीलणी एकादशी को दोपहर में १२-

०० से ६-०० बजे तक समूह सागर स्नान तथा ठाकुरजी का महाभिषेक किया गया था । इस प्रसंग में सभी चेप्टरो से हरिभक्त पधारे थे । संतो में स्वा. हरिप्रकाशदासजी, माधव स्वामी, श्रीजी स्वामी, धर्मकिशोर स्वामी, तता नरनारायण स्वामी इत्यादि संतोने ठाकुरजी का अभिषेक किया था । बहनो द्वारा भी सुंदर सभा का आयोजन किया गया था । अन्त में ठाकुरजी की आरती करके महाप्रसाद लेकर स्वस्थान प्रस्थान किये थे । प.पू. महाराजश्री की कृपा से यहाँ पर सुंदर सत्संग प्रवृत्ति चलती है।

(प्रवीणभाई शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनिया में सत्संग सभा

यहाँ न्युजर्सी (आई.एस.एस.ओ.) में शनिवार को सत्संग हुई थी । जिस में शा.स्वा. हरिप्रकाशदासजी, श्रीजीचरण स्वामी, ब्र. पवित्रानंदजी धर्मकिशोर स्वामीने हरिभ्कतों का कथा का लाभ देकर देव-आचार्य महाराजश्री का माहात्म्य समझाया था । प.पू. महाराजश्री की कृपा से सत्संग प्रवृत्ति अच्छी चलती है।

(प्रवीणभाई शाह)

छपैयाधाम पारसीपेनी में सत्संग

श्री नरनारायणदेव श्री स्वामिनारायण मंदरि पारसीपेनी छपैयाधाम में नव निर्मित मंदिर में रविवार को सुन्दर सत्संग सभा का आयोजन किया गया था । जिस में स्वा. हरिप्रकाशदासजी, स्वा. धर्मकिशोरदासजी, स्वा. नरनारायणदासजी इत्यादि संतो ने कथा की थी । आगामी मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव धूमधाम से मनाने की वात भी की थी । प.भ. प्रहलादभाईने आगामी कार्यक्रम की घोषणा की अन्त में सभी ठाकुरजी का प्रसार लेकर धन्य हो गये ।

(प्रवीणभाई शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर शिकागो

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ के शिकागो के मंदिर में उत्सव कथा स्वा. विश्वविहारीदासजी तथा शांति स्वामी की प्रेरणा से निरन्तर होती है।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के ४१ वें जन्मोत्सव प्रसंग पर सभा में प.पू. बड़े महाराजश्री के तस्वीर का पूजन किया गया था । जिस उपलक्ष में किर्तन-भजन,धुन किया गया था । शरदपूर्णिमा को सायंकाल रास-गर्बा के बाद दूध-चिउडा का प्रसाद दिया गया था ।(वसंत त्रिवेदी)

मूली श्री राधाकृष्णदेव देश के श्री स्वामिनारायण मंदिर जोडिया में मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव

अमदावाद श्री नरनारायदेव देश के मूली श्री राधाकृष्ण देश स्थित हालार प्रदेश के नवनिर्मित श्री स्वामिनारायण मंदिर जोडिया में श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ उपस्थिति में ता. १६-११-१३ से ता. १८-११-१३ तक त्रिदिनात्मक कथा पारायण, यज्ञ तथा मूर्ति प्रतिष्ठा धूमधाम से की जायेगी ।

शा.स्वा. छपैयाप्रसाददासजी तथा मूली देश के हालार के समस्त हरिभक्त

अक्षरनिवासी हरिभक्तों को भावभीनी श्रद्धांजली

मुंबई : प.भ. धर्मप्रसादभाई शुक्ल की बड़ी बहन गं.स्व. लीलावतीबहन रमणलाल का ता. ९-९-१३ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुआ है।

माणेकपुर : प.भ. बहेचरभाई भेमाभाई चौधरी (पूर्व कोठारी) ता. १३-१०-१३ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुआ है।

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।

નૂતન વર્ષાભિનંદન

વિક્રમ સંવત ૨૦૭૦ના નૂતન વર્ષના આપ સૌને શ્રી હરિ સ્મૃતિ સહિત જય શ્રી સ્વામિનારાયણ
વિ.સં. ૨૦૭૦ નું નૂતન વર્ષ આપ સૌને ખૂબજ સુખદાયી, જીવનમાં હર્ષોલ્લાસ, આનંદમય સમગ્ર પ્રકારે સુખ શાંતિ સાથે સ્વસ્થ અને સુંદર આરોગ્ય રહે. તેમજ સર્વોપરિ શ્રી હરિની કૃપાદૃષ્ટિ અને તેમના અપર સ્વરૂપ પ.પૂ.ધ.ધુ. આચાર્ય મહારાજશ્રી, પ.પૂ. મોટા મહારાજશ્રી અને પ.પૂ. લાલજી મહારાજશ્રીના સદૈવ કૃપા આશીર્વાદ વરસતા રહે અને ઉત્તરોત્તર પ્રગતિ થતી રહે અને સર્વાવતારી શ્રીજી મહારાજની સર્વોપરિ ઉપાસના દૃઢ થાય તેવી આજના નૂતન વર્ષના શુભ મંગલદિને પરમ કૃપાળુ શ્રીનરનારાયણદેવના ચરણોમાં પ્રાર્થના છે.

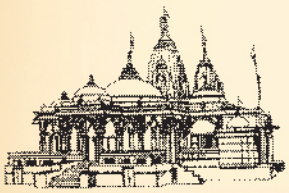

લિ. સ.ગુ. મહંત શાસ્ત્રી સ્વામી હરિકૃષ્ણદાસજી
તથા સંત મંડળના
નૂતન વર્ષના શ્રીહરિ સ્મૃતિ સહિત
હાર્દિક જય શ્રી સ્વામિનારાયણ

શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર- કાલુપુર, અમદાવાદ - ૩૮૦ ૦૦૧

संतरामपुर गाँव में श्री हनुमानजी के शतामृत पाटोत्सव प्रसंग पर ठाकुरजी की आरती उतारते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा सभा में बिराजमान यजमान परिवार साथ में प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

Registered under RNI NO.-GUJHIN/2007/20220 "Permitted to post at Ahd PSO on 11th every month under postal Regd. No.GUJ.581/12-14 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2014

(१) श्री स्वामिनारायण मंदिर अमदावाद में प.पू. लालजी महाराजश्री की शुभ उपस्थिति में शरदपूर्णिमा के दिन शरदोत्सव धूमधाम से मनाया गया । (२) नारायणघाट मंदिर में शरदोत्सव प्रसंग पर प.पू. लालजी महाराजश्री का आशीर्वाद लेते हुए यजमानश्री तथा ठाकुरजी की आरती उतारते हुए पू. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी (३-४) लेस्टर तथा केनेडा मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का ४१ वाँ जन्मोत्सव संपन्न ।(५) जेतलपुर अक्षर महोलवाड़ी में प.पू. लालजी महाराजश्री के वरद् हाथों सरस्वती पूजन ।

विश्व का सर्वप्रथम महामंदिर कालुपुर का जीर्णोद्धार तथा परमकृपालु श्री नरनारायणादिदेवों का नूतन भव्य सुवर्ण सिंहासन का कार्य पूर्ण होने से दिसम्बर-२०१४ में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की शुभ अध्यक्षता में महामहोत्सव धूमधाम से मनाया जायेगा ।

Jagadish Offset

Praful Kharsani